SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 21 • ISSUE 05 • JULY 2022

हिन्दी मासिक

जुलाई 2022

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

कुर्बानी का पैग़ाम

कुर्बानी का वास्तविक उद्देश्य अल्लाह की मोहब्बत व इताअत के सामने धन दौलत की कुर्बानी, इज़्ज़त व जाह की कुर्बानी, ख़ुवाहिशात की कुर्बानी है, यदि केवल सूरत रह जाए और उसमें रुह न हो तो उसकी कोई हक़ीक़त नहीं -

''अल्लाह तआला को कुर्बानी के जानवर का गोश्त और ख़ून नहीं पहुँचता, अल्लाह तआला को तुम्हारा तक़वा और नियत पहुँचती है।'' (अल - कुरआन)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै० मुहम्मद राबे हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि
एक प्रति ₹ 30/-
वार्षिक ₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007
जुलाई 2022 वर्ष 21 अंक 05

कुर्बानी की हक़ीकत

कुर्बानी दरअस्ल हज़रत इब्राहीम खलीलुल्लाह और उनके बेटे हज़रत इस्माईल अलै0 व उनकी बीवी हज़रत हाजरा अलै0 की यादगार, और मिल्लते इस्लामिया का अहम शिआर है आप सल्ल0 से किसी सहाबी ने पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल! इस कुर्बानी की हक़ीकत क्या है? आप सल्ल0 ने इरशाद फरमाया यह तुम्हारे बाप हज़रत इब्राहीम अलै0 की सुन्नत है।

(मुस्नदे अहमद, तिर्मिजी, इब्ने माजा)

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-9452295052

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	08
इन्सान कुरआन की नज़र में	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	10
कुरआन व हदीस, शिक्षा के लिए	हज़रत मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	12
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	14
भारत के अतीत में	सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	16
दीनी बेदारी के बग़ैर कुछ	मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी	19
सरवरे अम्बिया सल्ल0	मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0	23
पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल0	जमाल अहमद नदवी	26
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	28
कुर्बानी	इदारा	29
माँ का सम्मान	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	32
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन संभली रह0	34
गुमनाम शहीद	इदारा	36
अंधकार की पीड़ा	इं0 जावेद इक़बाल	38
मायूसी की नहीं ईमान के	मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह0	40
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अपील बराए तामीर स्टॉफ क्वाटर्स	इदारा	42

क़ुअनि की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-तौबाः-

अनुवाद–

ऐ नबी! काफ़िरों से जिहाद कीजिए और उन पर सख़्ती कीजिए और उनका ठिकाना जहन्नम है और वो बदतरीन जगह है(73) वो अल्लाह की क़समें ख़ाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा जबकि वो कुफ़्र का कलिमा कह चुके और इस्लाम ला कर मुनकिर हो गये[1] और ऐसी चीज़ का इरादा किया जो उनके हाथ में न आ सकी[2] और ये सब कुछ उसी का बदला था कि अल्लाह और उसके रसूल ने उनको अपने फ़ज़्ल से मालदार कर दिया था बस अगर वो तौबा कर लेते हैं तो उनके हक़ में बेहतर होगा और अगर नहीं मानते हैं तो अल्लाह दुनिया और आख़िरत में तकलीफ़ वाला अज़ाब देगा और पूरी ज़मीन पर उनका कोई साथी और मदद करने वाला नहीं होगा[3](74) और कुछ उनमें वो हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया कि अगर अल्लाह ने हमको अपनी कृपा से दे दिया तो हम अवश्य सद्क़ा करेंगे और भले लोगों में हो जायेंगे(75) फिर जब उसने अपना फ़ज़्ल उनको प्रदान किया तो वे उसमें कंजूसी करने लगे और मुँह फेर के भागे(76) तो अल्लाह ने उसके फलस्वरूप उस दिन तक के लिए उन दिलों में निफ़ाक़ (कपट) पैदा कर दिया जिस दिन वे अल्लाह से मिलेंगे इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से प्रतिज्ञा भंग (वादा खिलाफ़ी) की और इसलिए कि वे झूठ ही कहा करते थे[4](77) क्या उन्होंने नहीं जाना कि अल्लाह उनके भेद से और उनकी काना–फूसियों से अवगत है और अल्लाह तमाम छिपी चीज़ों को ख़ूब जानता है(78) ईमान वालों में से दिल खोल कर सद्क़ा करने वालों को जो ताना देते हैं और उन पर जो केवल अपनी गाढ़ी कमाई ही रखते हैं तो वे उनकी हंसी उड़ाते हैं, अल्लाह उनकी हंसी उड़ा चुका और उनके लिए दुखद अज़ाब है[5](79) आप उनके लिए माफी माँगें या न माँगें, सत्तर बार भी अगर आप उनके लिए माफ़ी मांगेंगे तब भी अल्लाह उनको माफ़ नहीं करेगा, यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का इन्कार किया और अल्लाह नाफ़रमान लोगों को राह नहीं देता(80) अल्लाह के पैग़म्बर से जुदा हो कर पीछे रह जाने वाले अपने बैठे रहने पर खुश हैं और उनको अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और जानों से जेहाद करना अच्छा न लगा और वे बोले कि गर्मी में मत निकलो, कह दीजिए कि दोज़ख की आग कहीं ज़्यादा गर्म है अगर वे समझ रखते हों(81) बस थोड़ा हंस लें और फिर अपनी कर्तूतों के बदले मन

भर के रोते रहें(82) तो अगर अल्लाह आपको उनके किसी गिरोह के पास वापस करे फिर वे आपसे निकलने की अनुमति मांगें तो कह दीजिए कि तुम मेरे साथ कभी भी कदापि न निकलोगे और मेरे साथ किसी दुश्मन से कदापि न लड़ोगे, पहली बार बैठ रहना तुम्हें अच्छा लगा तो पीछे रह जाने वालों के साथ बैठे रहो[6](83) और उनमें जो मर जाएं उनमें से किसी की आप कभी भी जनाज़े की नमाज़ न पढ़ें और न उसकी क़ब्र पर खड़े हों निःसंदेह उन्होंने अल्लाह और उसके पैग़म्बर का इन्कार किया और नाफरमानी (अवज्ञा) की हालत में मरे[7](84) उनके माल और संतान पर आप हैरत न करें अल्लाह तो चाहता है कि इससे उनको दुनिया में अज़ाब दे और कुफ़्र ही की हालत में उनकी जानें निकलें(85) और जब कोई सूरह उतरी कि अल्लाह पर ईमान ले आओ और उसके पैग़म्बर के साथ जेहाद करो तो उनमें हैसियत वाले लोग आपसे छुट्टी मांगते हैं और कहते हैं कि हमें छोड़ जाइये बैठ रहने वालों के साथ हम भी रह जाएंगे(86)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. तबूक युद्ध के अवसर पर मुनाफ़िक खुल कर सामने आए इसलिए आदेश हो रहा है कि अब उनके साथ सख़्ती की जाए और हर हाल में बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया जाए, जेहाद तलवार से भी होता है, ज़बान से भी होता है, कलम से भी होता है, बुराईयों को दूर करने का हर संघर्ष जेहाद कहलाता है, उसकी उच्चतम श्रेणी तलवार से जेहाद करना है जिसमें आदमी जान हथेली पर रख कर निकलता है।

2. मुनाफ़िकों ने जो काफिरों वाली बातें कही थीं उन पर जब पकड़ हुई तो उन्होंने साफ़ इन्कार कर दिया कुर्आन गवाही दे रहा है कि उनकी ओर से जो शिकायतें पहुंची हैं वह सही हैं।

3. एक बार कुछ मुनाफ़िकों ने तबूक युद्ध से वापसी पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को शहीद करने की कोशिश की थी हज़रत हुज़ैफ़ा और अम्मार साथ थे, हज़रत अम्मार को उन्होंने घेर लिया लेकिन हज़रत हुजैफ़ा ने मार मार कर उनकी ऊँटनियों के मुँह फेर दिए चुंकि वे मुँह लपेटे हुए थे इसलिए हज़रत हुज़ैफ़ा उनको पहचान न सके बाद में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनके नाम हज़रत हुज़ैफा और हज़रत अम्मार को बता दिए मगर मना कर दिया कि किसी को न बताएं ''व हम्मू बिमा लम यनालू'' में इसी घटना की ओर संकेत है, आगे कहा जा रहा है कि उनकी सारी दुश्मनियाँ केवल इसलिए हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दुआ से वे धनी हो गये मुसलमानों के साथ रहने की वजह से ग़नीमत के माल में हिस्सा पाते हैं इन उपकारों का बदला यह दिया कि धोखे बाज़ी करने लगे।

4. यहाँ एक मुनाफ़िक़ की घटना बयान की जाती है कि उसने धनी होने की हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से दुआ कराई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि थोड़ी चीज़ जिस पर तू

शुक्र करे उससे ज़ियादा बेहतर है जिसके अधिकार अदा न कर सके उसने ज़िद की तो आपने दुआ कर दी वह इतना धनी हुआ कि मदीने के बाहर जा कर आबाद हुआ, धीरे–धीरे जुमा में आना भी बन्द कर दिया जब ज़कात का वसूल करने वाला पहुँचा तो कोई कटाक्ष कर दी, इसी पर यह आयतें उतरीं, फिर बदनामी के भय से ज़कात ले कर आया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा कि खुदा ने तेरी ज़कात वसूल करने से मुझे मना कर दिया है, यह सुन कर बड़ा शोर व गुल मचाया मगर निफ़ाक़ (कपट) दिल में था, हज़रत अबू बक्र, उमर और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में भी आया मगर उन्होंने भी इन्कार किया अंततः मुनाफ़िक़ बने रहने की हालत में ही हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माने में मर गया।

5. एक बार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सद्क़ा देने पर प्रेरित किया हज़रत अब्दुर्रहमान पुत्र औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु चार हज़ार दीनार लाए, हज़रत आसिम पुत्र अदी सौ वसक़ खजूरें लाए मुनाफ़िक़ों ने उन पर कटाक्ष की दिखावा करते हैं फिर एक सहाबी बड़ी मेहनत से कमा कर थोड़ी सी खजूरें लाए तो मुनाफ़िक़ उनका मज़ाक उड़ाने लगे कि ख़ून लगा कर शहीदों में शामिल होना चाहते हैं हर एक के साथ मज़ाक़ करते, अल्लाह कहता है कि ''अल्लाह ने उनके साथ मज़ाक किया'' यानी मज़ाक उड़ाने के लिए ऊपर से छोड़ दिये गये हैं और भीतर ही भीतर उनकी ज़ड़ें कट रही हैं।

6. पापी और गलत अक़ीदा रखने वाले के बीच यही अंतर है, पापी के लिए आपका माफ़ी मांगना उसके गुनाहों की माफ़ी का साधन है लेकिन मुनाफिक़ गलत अक़ीदा रखने वाले के बारे में कहा जा रहा है कि आप सत्तर बार भी माफ़ी मांगें तब भी अल्लाह उनको माफ़ नहीं करेगा, इसलिए कि वे भीतर से इनकार करने वाले हैं, लेकिन आप की कृपा थी कि आपने कहा कि अगर सत्तर बार से अधिक में माफ़ी हो जाती तो मैं सत्तर बार से अधिक माफ़ी मांगता, आगे उन मुनाफ़िक़ों का उल्लेख है जो तबूक युद्ध में शामिल नहीं हुए और इस पर प्रसन्न भी हुए कि हम मुसीबत से बच गए, अल्लाह कहता है कि आगे उनके लिए रोते रहने का अवसर है, जब अल्लाह का अज़ाब सामने आएगा और दुनिया में भी अपमान का सामना करना होगा यह भी कहा जा रहा है कि तुमने विकलांगों के साथ रहना पसंद किया अब आगे भी तुम्हें हमारे साथ युद्धों में जाने की आवश्यकता नहीं तुम्हारे दिलों का हाल मालूम हो चुका है।

7. हज़रत मुहम्मद सल्ल0 ने अब्दुल्लाह पुत्र उबई (मुनाफ़िक़ों के सरदार) के जनाज़े की नमाज़ पढ़ी कब्र में उतरे और पूरी सहानुभूति का प्रदर्शन किया मात्र इसलिए कि शायद दूसरों के दिलों में आपकी कृपा और दया को देख कर इस्लाम से प्रेम में बढ़ोत्तरी हो, लेकिन बाद में इस आयत से मुनाफिक़ों के जनाज़े की नमाज़ पढ़ने और उनके लिए क्षमा याचना से रोक दिया गया इसलिए कि इसमें मुनाफ़िक़ों का उत्साह वर्धन और ईमान वालों के दिल टूटने की शंका थी इसके बाद आपने किसी मुनाफ़िक़ के जनाज़े की नमाज़ नहीं पढ़ी।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

हज़रत फातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा की श्रेष्ठताः—

हज़रत मिस्वर बिन मख्रमः रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः फातिमा मेरा अंश है (मेरे शरीर का एक टुकड़ा है) जिसने फातिमा को नाराज किया उसने मुझे नाराज़ किया। (बुख़ारी)

हज़रत हसन रज़ि0 की प्रियताः—

हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने देखा कि हसन बिन अली रज़ि0 आप सल्ल0 के कन्धे पर चढ़े हुए हैं और आप सल्ल0 फरमा रहे हैं ऐ अल्लाह! मैं इनसे मुहब्बत करता हूँ, तू भी इनसे मुहब्बत फरमा। (बुखारी)

हज़रत हसन रज़ियल्लाहु अन्हु की अल्लाह के रसूल सल्ल0 से मुशाबहत और एकरूपताः—

हज़रत अनस रज़ि0 फरमाते हैं कि हसन बिन अली से ज़ियादा कोई अल्लाह के रसूल सल्ल0 से मुशाबह (अनूरूप) न था। (बुखारी)

हज़रत हुसैन रज़ि0 के भाग्यहीन हत्यारों की निन्दाः—

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु फरमाते हैं कि इराक वाले मक्खी के मारने का मस्अलः तो पूछते हैं (हालांकि उन्हीं लोगों ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 की बेटी हज़रत फातिमा रज़ि0 के लाडले (हज़रत हुसैन) की हत्या कर डाली, जबकि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया हैः वो दोनों (हसन और हुसैन रज़ि0) दुनिया के मेरे दो फूल हैं। (बुखारी)

अहले बैत में सबसे ज़ियादा महबूब हसन और हुसैन रज़ि0 हैं:—

हज़रत अनस रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा गया कि अहले बैत में आपको सबसे ज़ियादा महबूब कौन है? आप सल्ल0 ने फरमायाः हसन व हुसैन। आप सल्ल0 हज़रत फातिमा से कहा करते थे मेरे दोनों बच्चों को बुलाओ, फिर आप उन दोनों को सूँघते और लिपटाते। (तिर्मिज़ी)

जन्नती नवजवानों के सरदारः—

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हसन व हुसैन जन्नती नौजवानों के सरदार होंगे। (तिर्मिजी)

हज़रत अली रज़ि0 की मुहब्बत ईमान की अलामत (प्रतीक):—

हज़रत इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः अली मेरे हैं और मैं उनका हूँ और वो तमाम ईमान वालों के महबूब हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत ज़ैद बिन अरक़म रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः जिसका मैं महबूब हूँ, अली भी उसके महबूब हैं।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु की श्रेष्ठताः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ियल्लाहु अनहुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फरमायाः तुम दुनिया और आखिरत (मरने के बाद की ज़िन्दगी) दोनों जगह मेरे भाई हो।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की श्रेष्ठताः–

हज़रत आइशा रज़ि0 फरमाती हैं कि मैंने हज़रत खदीजा रज़ि0 के सिवा अल्लाह के नबी सल्ल0 की किसी बीवी पर रश्क (उस जैसी बनने की तमन्ना) नहीं किया, हालांकि उनका निधन मेरी शादी से पहले ही हो चुका था, लेकिन आप सल्ल0 उनकी बहुत ज़ियादा चर्चा करते थे। अल्लाह तआला ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 को हुक्म फरमाया था कि उन (खदीजा) को मोती के बने हुए घर की खुशखबरी दे दें। आप सल्ल0 जब कोई बकरी ज़ब्ह करते तो हज़रत खदीजा रज़ि0 की सखी–सहेलियों को इतना हदया (तोहफा) भेजते जो उनके लिए काफी होता।

(बुखारी शरीफ)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा की श्रेष्ठताः–

हज़रत उर्वः बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा (ताबेई) अल्लाह के रसूल सल्ल0 का इरशाद नकल करते हैं कि आप सल्ल0 ने फरमायाः ऐ उम्मे सलमा! तुम मुझे आइशा रज़ि0 के बारे में दुःख न दो, आइशा के सिवा तुम में कोई नहीं है जिसके लेहाफ में मुझ पर वह्य (फरिश्ता जिबरईल अमीन द्वारा अल्लाह का संदेश) आई हो।

(बुखारी शरीफ)

सहाबा किराम को बुरा कहने का नतीजा अल्लाह की पकड़ हैः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन फज़्ल रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने ताकीद फरमाई कि मेरे सहाबा के बारे में खुदा का डर रखना और मेरे बाद उनको (धिक्कार) का निशाना मत बना लेना, (याद रखो) जो उनसे मुहब्बत रखेगा वह मेरे कारण रखेगा और जो उनसे बुग्ज़ (ईर्ष्या) रखेगा वह मुझसे बुग्ज़ रखने के कारण रखेगा, और जो उनको दुख देगा मानो उसने मुझे दुःख दिया, और जिसने मुझे दुःख दिया उसने अल्लाह को दुःख देने की इच्छा की तो करीब है कि वह पकड़ कर ले।

तिर्मिज़ी)

आप सल्ल0 का ज़माना सबसे बेहतर और रौशन ज़मानाः–

इमरान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः मेरी उम्मत के बेहतरीन लोग मेरी सदी (ज़माने) के हैं, फिर वो लोग (ताबिईन) हैं जो उन से मिले हुए हैं। इमरान रज़ि0 कहते हैं कि याद नहीं कि पहली सदी के बाद दो बार कहा या तीन बार। फिर ऐसे लोग पैदा होंगे जो बिन मांगे गवाही देते फिरेंगे, ख़यानत (विश्वास–घात) करेंगे, उनमें अमानत न होगी और उन पर भरोसा न किया जायेगा, नज़रें और मन्नतें मानेंगे लेकिन पूरी न करेंगे और उनमें मोटापा पैदा होगा।

(बुखारी)

शेष पृष्ठ..29...पर

सम्पादकीय

इन्सान कुरआन की नज़र में

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

यह विशाल दुनिया बड़े बड़े महाद्वीप और महासागर पर आधारित है इसमें जंगल, पहाड़, दरया भी हैं, जिसकी वजह से यह दुनिया बहुत ख़ूब सूरत और सुन्दर हो गई, ज़मीन के अलावा, आसमान पर कुदरत ने सूरज, चाँद सितारे बनाए जिसकी वजह से दुनिया की खूबसूरती में और इज़ाफ़ा हो गया, यह सब कुछ था परन्तु दुनिया वीरान सुनसान थी, मकान था लेकिन इस मकान में कोई रहने वाला न था जो इन प्राकृतिक दृश्यों से आनन्द ले, मकान की शोभा और रौनक़ मकीन से है, एक वह समय आया कि अल्लाह ताआला ने इरादा किया कि इस वीरान दुनिया को इनसानों से आबाद किया जाये, चुनांचि बहुत ऊँचे पैमाने पर आस्मान की नूरानी मख़लूक फ़रिश्तों के बीच यह एतिहासिक ख़बर दी जिसको कुरआन की सूरः बकरा की आयत नं0 30 में बताया गया है, ''याद करो उस समय को जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा था, कि मैं धरती में एक ख़लीफ़ा (प्रतिनिधि बनाने वाला हूँ'') उन्होंने निवेदन किया ''क्या आप धरती में किसी ऐसे को नियुक्त करने वाले हैं जो उसकी व्यवस्था को बिगाड़ देगा और रक्तपात करेगा? आपकी तारीफ़ और प्रशंसा के साथ तस्वीह और आपकी पवित्रता का वर्णन तो हम कर ही रहे हैं। ''अल्लाह तआला ने फ़रमाया मैं जानता हूँ जो कुछ, तुम नहीं जानते।''

ख़लीफ़ा का अर्थ और उद्देश्य यही है कि अल्लाह का ख़लीफ़ा अल्लाह के आदेशों को ज़मीन वालों पर लागू करे, अल्लाह तआला ने यह काम अपने रसूलों और नबियों द्वारा लिया और उनके उत्तराधिकारियों से लिया।

अल्लाह तआला ने इनसान को सर्वश्रेष्ट बनाया, दुनिया की सारी चीज़ें उसकी सेवक हैं, यह उसके इख़्तियार में है कि वह अपने को सम्मानित करे या अपमानित करे, एक अल्लाह जिसके अधिकार में दुनिया की हर छोटी बड़ी चीज़ है उसको छोड़ कर अपना मस्तक जो शरीर का प्रतिष्ठित अंग है पेड़ों, पत्थरों के सामने, नदी और पहाड़ों के सामने, सूर्य और चन्द्रमा के सामने झुका दे, इस संक्षेप व्याख्या के बाद आप कुरआन की सूरः बनी इस्राईल की आयत नं0 70 पढ़िये–

अनुवादः– निःसंदेह हम ने आदम की औलाद को बड़ी इज़्ज़त दी और उन्हें जल और थल की सवारियाँ दीं, और उन्हें पाक चीज़ों की रोज़ी (जीविका) दी, और अपने बहुत से पैदा किये हुवों पर स्पष्ट श्रेष्ठता प्रदान की'' इस शाब्दिक अनुवाद के बाद ज़रा विस्तार के साथ उस सम्मान और श्रेष्ठता को समझिये जो हर इन्सान को मोमिन और ग़ैर मोमिन सबको ईश्वर की ओर से प्रदान हुई,

प्राचीनकाल की यात्रा घोड़े, गधे, ऊँट, ख़च्चर, नाव और कश्ती से होती थी, परन्तु वर्तमान काल में ट्रेन, बस हवाई जहाज़ और स्टीमर द्वारा होती है।

हफ़्तों और महीनों का सफ़र दिनों और घण्टों में होने लगा, ईश्वर द्वारा उसे जो बुद्धि दी गई उससे दूसरे जीव जन्तु और पशु वंचित हैं, इनसान ने अपने आराम और सरलता के लिए नये नये यन्त्र और मशीनों का आविष्कार किया, इसी प्रकार इन्सान को जो बुद्धि और चेतना मिली उसके द्वारा वह अच्छे और बुरे रूप कुरूप में अन्तर करता है, सर्दी, गर्मी और मौसम की कठिनाई से बचाव के लिए वह मकान और लिबास बनाता है, इन सब कामों में वह सलीक़ा मन्दी और कारीगरी इख़्तियार करता है।

इन्सान की ख़ुराक़ के लिए जो ग़ल्ला, फल और मेवा अल्लाह ने पैदा किये वह भी बहुत जायके दार स्वादिष्ट, यह सब इन्सान के सम्मान और श्रेष्ठा के लिए, इन सब चीज़ों से दूसरे जीवजन्तु वंचित हैं।

इन्सान के सर्वश्रेष्ट होने और उसकी उच्चता को स्पष्ट करने के लिए कुर्आन की जो आयतें पेश की जा सकती हैं उनमें से सूरः अहज़ाब की आयत नं0 72 है, अनुवादः ''हमने अपनी अमानत को आसमानों पर, ज़मीन पर, और पहाड़ों पर पेश किया लेकिन सब ने उठाने से इन्कार कर दिया और उससे डर गये मगर इन्सान ने उसे उठा लिया, वह बड़ा ही ज़ालिम जाहिल है'' अमानत से वह शरअ़ई आदेश और फ़राएज़ व वाजिबात मुराद हैं जिन की अदाएगी पर सवाब और उनसे पीठ फेरने और इन्कार करने पर अज़ाब होगा, यह शरअई आदेश जब आसमान ज़मीन पहाड़ों पर पेश किये गये तो वह उनके उठाने से डर गये लेकिन जब इन्सान पर यह चीज़ पेश की गई तो वह अल्लाह के अज्ञापालन के अज्र व सवाब और उसकी फ़ज़ीलत को देख कर अमादा हो गया।

कुरआन ने इनसान की उत्तमता और श्रेष्ठता को विभिन्न प्रकार से बयान किया है, सूरः वत्तीन में फ़रमाया ''हमने इन्सान को सर्वोत्तम संरचना के साथ पैदा किया'' अर्थात हमने इन्सान को बहुत ख़ूबसूरत सांचे में ढाला है, बेशक इन्सान अपनी बनावट, गुण और रूप के ऐतिबार से कुदरत का शाहकार है यह सारी उत्तमता और श्रेष्ठता उसी समय शोभा देती है जब इन्सान अपने उत्तरदायित्व को भलीभांति पूरा करे, आज के मानव ने दानव का रूप धारण कर लिया है, जिसकी वजह से दुनिया की शांति समाप्त हो गई है, ताक़त के बल पर दूसरों के अधिकारों का हनन एक साधारण बात है, वर्तमान समाज में मानव सम्मान बहुत कम लोगों में पाया जाता है इस समय समाज गिरावट की चरम सीमा पर है, सत्य और न्याय यह दोनों शब्द अपनी वास्तविकता खो चुके हैं, इस समय भीड़ की हिंसा का बोल बाला है।

❖❖❖

कुरआन व हदीस, शिक्षा के लिए उत्साह वर्धक

हज़रत मौलाना सै0 मु0 राबे हसनी नदवी

मुसलमानों के लिए तो अख़लाक़, इनसानी शराफ़त और धार्मिक ज्ञान के विषयों पर कुर्आन मजीद से अधिक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली कोई किताब नहीं है, इसमें जगह जगह इल्म की प्रशंसा आई है, इल्म और शिक्षा का वर्णन प्रशंसात्मक शैली में किया गया है, फ़रमाया ''अल्लाह से उस के बन्दों में से केवल इल्म वाले ही डरते हैं, निः सन्देह अल्लाह प्रभुत्त शाली है, और माफ़ करने वाला है'', और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पहली वह्य ''इक़रा' (पढ़िये) के शब्द से की गई। फिर नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की अहादीस शरीफा की मदद से मुसलमान विद्यार्थियों को शिक्षा की बहुत बड़ी मात्रा मिली, और विद्यार्थी के साहस को बहुत बढ़ाया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में इस्लाम का पहला मदरसा यानी ''सुफ़्फ़ा'' की पाठशाला बनी जिससे इस्लामी जगत के तमाम मदरसों और यूनिवर्सिटियों का सिलसिला मिलता है।

इल्म का इस्लामी अर्थः—

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इल्म के प्रलोभन और महत्व के विषय में फ़रमाया ''बेशक फ़रिशते अपने परों को विद्यार्थियों के लिए बिछा देते हैं, इल्म की प्राप्ति से प्रसन्नता के कारण'' लेकिन जिस प्रकार हर शब्द को उसके विशेष सर्किल के अन्दर रखते हुए निश्चित किया जाता है, उदाहरणः एक किसान जब जानकारी का शब्द प्रयोग करेगा तो उसके सर्किल में खेती और ज़मीन से सम्बन्धित जानकरी मानी जाएगी।

इसी प्रकार उपरोक्त हदीस में इल्म से मुराद वह इल्म समझा जायेगा, जो कुर्आन हदीस के पथ प्रदर्शन और सहयोग से प्राप्त होता है। लेकिन इससे इल्म की प्राप्ति और उसकी ओर ध्यान देने पर रोक लगाना उद्देश्य नहीं, क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इल्म के दूसरे क्षेत्रों को जो मानव जीवन से सम्बन्धित हैं और उसके लिए आवश्यक हैं उनको लाभप्रद बताया हैं, उदाहरणतः खजूर के क़लम लगाने के विषय में आप सल्ल0 ने सहाबा के खेती के अनुभव को उचित पाया तो फ़रमाया ''यह तुम्हारे दुन्यावी काम हैं'' इसके अन्तर्गत सांसारिक विज्ञान आ जाते हैं और हमको इजाज़त है कि उनके विषय में हम इन्सानी अनुभव से फ़ाइदा उठाएं और उनके अनुभव और जानकारी की बुनयाद पर उसको तरक़्क़ी दें और इन्सान की दुन्यावी सफलता के लिए उनको अपनाएं और प्रयोग करें।

बहुत से धार्मिक गुरु, राष्ट्रीय नेता, अभिभावक और शिक्षकों ने शिक्षा और दीक्षा को अपना विषय बनाया है, कुर्आन और हदीस में तो उसकी ओर विशेष ध्यान दिया गया है। हदीस शरीफ़ में आया है कि ''बल्लिगू अन्नी वलौ आयः'' मेरी ओर से बात पहुँचा दो चाहे केवल एक ही आयत हो।

हर समाज में शिक्षा की फ़िक्र होती हैः—

इन्सान ने अपने समाज को बाक़ी रखने के लिए उसकी उत्तमता, उन्नति के लिए नियमानुसार शिक्षा के साधनों को हर ज़माने में अपनाने की

कोशिश की है और अपनी इल्मी योग्यता के अनुसार उन साधनों को जो स्पष्ट नहीं थे उनको स्पष्ट किया, जो बेक़ाइदा थे उनको निश्चित रूप दिया, और अपनी शिक्षा पद्धति को उत्तम ढंग से चलाया जिसके परिणाम स्वरूप समाजी ज़िन्दगी को तरक़्क़ी दी है, जिस समाज ने शिक्षा को नज़र अन्दाज़ किया और शिक्षा की ओर ध्यान नहीं दिया, वह उन्नति के मार्ग से हट गये और सफलता की मंज़िल तक नहीं पहुँच सके।

वर्तमान उन्नति प्राप्त यूरोप और अमेरीका की उन्नति और शक्ति का जब पुनर्जागरण शुरु हुआ तो यूरोप ने इल्म की ओर ध्यान दिया, यूरोप ने ज्ञान और शिक्षा की सरपरस्ती और तवज्जुह, मुसलमानों के उनदुलसी तमद्दुन से ली, जिसमें मुसलामनो के अपने उलूम व तजुरबात के साथ प्राचीन यूरोप के उलूम व तजुरबात का भी एक हिस्सा था, जिसको मुसलमानों ने अपने दुन्यावी उलूम का एक भाग बनाया और उनसे फ़ाइदा उठाया था, यूरोप ने मुसलमानों से प्राप्तकर्ता सिद्धान्त और ज्ञान को बुन्याद बना कर उसमें नये अनुभव किये और दुन्यावी और भौतिक ज्ञान और शिक्षा को आगे बढ़ाया, यहाँ तक कि वर्तमान भौतिक दुनिया के गुरु का स्थान प्राप्त कर लिया और यह खेद जनक संयोग है कि यूरोप की तरक़्क़ी का ज़माना जो सोलहवीं शताब्दी ईस्वी से शुरु हुआ, मुसलामनों की असावधानी और पतन का ज़माना रहा, जिसकी वजह से दुनिया का नेतृत्व मुसलमानों के हाथों से निकल कर यूरोप की क़ौमों के हाथों में स्थांतरित हो गया अन्यथा मौजूदा पश्चिमी संस्कृति से पहले मुसलमानों की संस्कृति ही वह संस्कृति थी जिसने दुनिया के अधिकांश भू–भाग पर गहरा प्रभाव डाला था, और मुसलमान उलमा, फ़लासफ़ा ने ज़माने के बड़े उस्ताद का कैरेक्टर अदा किया था।

मुसलमानों में शिक्षा का कामः–

मुसलमानों में शिक्षा का आरम्भ इस्लाम के आरम्भ के साथ ही हुआ, उनको कुर्आन शरीफ़ के रूप में, सबसे बड़ा शिक्षक मिला था, जिसने न केवल उनको बल्कि पूरी मानवता को सभ्यता और संस्कृति, इल्म, इनसानियत के उत्तम और उचित सिद्धान्त बताए, और उन पर अमल करने की राहें भी नियुक्त कीं, फिर मुसलामनों ने कुर्आनी इल्म प्राप्त करने के बाद दूसरी क़ौमों से प्राप्त जानकारी और उनके उलूम का अध्ययन भी किया और उनके उलमा व फ़लासफ़ा के विचारों का जाइज़ा लिया और उनसे आवश्यकतानुसार फ़ाइदा उठाया फिर उसमें बहुमूलय इज़ाफ़ा किया, जिससे वह नये रूप में ढल गये।

यूरोप बाद में जागरूक हुआ, चुनांचि उसने अपने पश्चिमी इल्म और संस्कृति की बुनयाद मुसलमानों के इल्म और संस्कृति पर रखी क्योंकि मुसलमान ही उसके क़रीबी अनुसरण योग्य पूर्वज थे, लेकिन राष्ट्रीय और स्वदेशी पक्षपात की वजह से अपना रिश्ता प्राचीन इतिहास के पश्चिमी संस्कृति से जोड़ा और सारा स्वभाव उनहीं से लेने की कोशिश की, इस सम्बन्ध में प्राचीन रूमी संस्कृति और यूनानी फ़लसफ़े पर अपनी नैतिकता और सांस्कृतिक ज़िन्दगी की बुन्याद रखी।

❖❖❖

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

सिर्फ और सिर्फ अल्लाह की बात माननाः–

अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर हुक्म उतारे, उन पर चलना और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात मानना फर्ज है और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात मानने को जरूरी जानना ईमान का बुनियादी हिस्सा है, यही अस्ल दीन है कि अल्लाह के हुक्म पर चला जाए और अल्लाह का हुक्म रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताने से ही मालूम होता है,लिहाजा उस पर अमल करने में निजात है अगर किसी दूसरे को खालिस इताअत के काबिल समझा जाए तो ये शिर्क है चाहे कितना ही बड़ा बुजुर्ग, वली, इमाम, मुजतहिद या कुतुब हो, सब अल्लाह के बंदे हैं और सब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पैरोकार हैं, नमाज अल्लाह ने फर्ज की है, अब अगर कोई नमाज़ माफ कर दे तो ऐसे शख्स की बात मानना और उसको इताअत के काबिल समझना शिर्क है, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ माफ़ नहीं की और चारों अरकान नमाज, रोजा, जकात और हज को दीन का पिलर बताया और फरमाया कि जिसने नमाज़ को ढा दिया मानो उसने दीन की बुनियाद ढा दी फिर उस के बाद उसके विरुद्ध किसी दूसरे की बात मान कर नमाज को माफ समझना या शरीयत के हुक्मों को ज़रूरी न समझना और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात को छोड़ कर पीर की बात से दलील लेना, ये शिर्क का अमल है। यहूदियों और ईसाईयों ने यही किया, अल्लाह तआला फरमाता हैः–

अनुवादः–उन्हों ने अपने उलमा और अपने बुजुर्गों को अल्लाह के अलावा रब बना लिया। (अल–तौबाः 31)

ये उलमा और इमाम कुरआन व हदीस को स्पष्ट रूप से खोल खोल कर बयान करते हैं, कोई हुक्म अपनी तरफ़ से नहीं देते इसीलिए उनकी बात मानी जाती है, हक़ीक़त में इत्तेबा और तक़लीद (अनुसरण) उनकी नहीं होती बल्कि रसूलुल्लाह की होती है।

और जो लोग अपनी तरफ से उसमें ठहराते हैं और उनको पूरा करना ज़रूरी जानते हैं ये सब मुशरिकों वाले काम हैं, सितारों से शगुन लेना, गैरुल्लाह की कस्में खाना, गैरुल्लाह की नज्र मानना, किसी के नाम पर जानवरों के नाक या कान काटना और उनकी शक्लें बिगाड़ना और उसी के नाम पर उनको छोड़ देना और उन पर सवारी को बे अदबी समझना और उनके अलावा भी खास महीनों के खास पकवान किसी के नाम पर पकाना या खास लिबास किसी के नाम पर पहनना और उसको ज़रूरी समझना ये सब निहायत गलत और मुशरिकों वाले काम हैं,

शरीयत एक है जो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जरिये उम्मत को मिली है, उस पर चलने को ज़रूरी जानना ये इस्लाम का बुनियादी अक़ीदा है, और कोई ये समझता है कि शरीयत में तब्दीली मुमकिन है और कोई भी आ कर उसमें तब्दीली कर सकता है तो ये खुला शिर्क है, इसलिए कि अल्लाह तआ़ला ऐलान फरमा चुकाः–

अनुवादः– आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन मुकम्मल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत तमाम कर दी और दीन के तौर पर तुम्हारे लिए इस्लाम को पसंद कर लिया।

(अल–माइदाः 3)

तौहीद–ए–सिफातः–

जिस तरह अल्लाह को तनहा रब समझना और इबादत वाले आमाल को उसी के लिए खास करना ज़रूरी है जिसको (तौहीद–ए–उलूहियत) और तौहीद–ए–रुबूबियत कहते हैं इसी तरह उसकी सिफात में उसको अकेला व तन्हा समझना भी अकीदा–ए–तौहीद के लिए ज़रूरी है, अल्लाह फरमाता हैः–

अनुवादः– कोई भी उसके जैसा नहीं।

(अल–शूराः 11)

न जात में न सिफात में, उसका इल्म, उसकी कुदरत, उसका काम और इनके अलावा उसके सब सिफात उसकी जात की तरह असीमित हैं, उसकी जात व सिफात के अलावा सब उसकी मख़लूक हैं, जिनकी अल्लाह ने सीमाएं रखी हैं, इसी तरह उनकी सिफात भी सीमित हैं, अल्लाह तआ़ला ने जिस मख़लूक़ को जैसा बनाया उसके हिसाब से उसके अंदर सिफात (गुण) रखी हैं, इंसान अशरफुल मख़लूकात है, उसके अंदर जो सिफ़ात हैं वो दूसरी मख़लूक में नहीं, फिर इंसानों में अल्लाह ने समझ के ऐतबार से बड़ा फ़र्क़ रखा है, उस हिसाब से सिफ़ात भी बहुत अलग अलग होती हैं, एक समझ जाहिल आदमी की होती है, और एक समझ पढ़े लिखे आदमी की होती है लेकिन ये सब कुछ अल्लाह की दी हुई ज़ाहिरी चीज़ों पर आधारित होता है।

❖❖❖

एक गीत

सोने रूपे के ये धारे
डूबे इनके लोभी सारे
बच कर रहना तुम हे प्यारे
दुनिया माया जाल
हे प्यारे दुनिया माया जाल

ईश-प्रेम से मन को भरलें
माता-पिता की सेवा कर लें
पीड़ित जनता के दुख हर लें
हो जाएं खुशहाल
हे प्यारे दुनिया माया जाल

सत्य धर्म यदि जनता पाए
देश शक्तिशाली बन जाए
जनता का दुख सब कट जाए
आये फिर न अकाल
हे प्यारे दुनिया माया जाल

ईश्वर की हम अनुमति पाएं
सेवक बन कर राज चलाएं
नित्य देश को स्वर्ग बनाएं
हो कर माला माल
हे प्यारे दुनिया माया जाल

❖❖❖

तकरीर से मुमकिन है न तहरीर से मुमकिन
वह काम जो इन्सान का किरदार करे है

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैय्यद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

प्राचीन परम्पराओं की रक्षाः–

हज्जाज के इस आदेश के बाद मुहम्मद बिन क़ासिम ने ब्राह्मणाबाद के महत्वपूर्ण लोगों, सरदारों और ब्राह्मणों को बुला कर आदेश दिया कि वह अपने मन्दिर का निर्माण कराएं। मुसलमानों के साथ क्रय विक्रय करें, निर्भीक हो कर रहें, अपनी दशा को बेहतर बनाने का प्रयास करते रहें। भिखारी ब्राह्मणों के साथ अच्छा व्यवहार करें, अपने पूर्वजों के रीति–रिवाजों को जारी रखें। ब्राह्मणों को जो दान या दक्षिणा दिए जाते थे वह अब भी दिये जाएं। मालगुज़ारी के 100 दिरहम में तीन दिरहम ब्राह्मणों के लिए अलग कर लिए जाते थे ताकि आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता होती रहे और शेष रक़म ख़ज़ाने में डाल दी जाती थी ताकि उसमें ख़यानत न हो। यह परम्परा जारी रखी जाए। सरदार जो देय ब्राह्मणों को दिया करते थे, वह पहले की तरह दिया करें। ब्राह्मणों को यह भी अनुमति दी गयी कि वह यथापूर्व अपने ताँबे का बर्तन लेकर घर–घर जाएं, अनाज माँगा करें, ताकि वह भूखे न मरें। मुहम्मद बिन क़ासिम ने ब्राह्मणों की सभी बातों को स्वीकार करने के साथ यह भी घोषणा कर दी कि उनके मन्दिर ऐसे ही है जैसे कि सीरिया और इराक़ के यहूदियों और ईसाइयों की इबादतगाहें और आग पूजने वाले के अग्निकुण्ड हैं। उनको अनुमति है कि जिस तरह चाहें इबादत करें। मुहम्मद बिन क़ासिम ने ब्राह्मणाबाद के सरदार को राणा की उपाधि से सम्मानित किया।

प्रजा पर उपकार की नसीहतः–

उसने लोहाना के जाटों की प्राचीन परम्पराओं को जारी रखा। हालांकि वो बहुत ही क्रूरतापूर्ण थीं लेकिन उनमें हस्तक्षेप करना पसन्द नहीं किया। हज्जाज ने एक दूसरे पत्र में मुहम्मद बिन क़ासिम की सैनिक व्यवस्था, प्रजा के उपकार, देश के प्रशासन की व्यवस्था और जन–कल्याण के कामों की प्रशंसा की, क्योंकि जो ख़िराज निर्धारित किया गया था,वह नियमित रूप से वसूल हो जाता था। फिर एक दूसरे पत्र में निर्देश दिया कि वह प्रजा पर उपकार और लोकप्रियता का ऐसा आदर्श प्रस्तुत करे कि उसका नाम रोशन हो और दुश्मन उसकी आज्ञापालन करने के इच्छुक हों।

उद्योगपतियों, व्यापारियों और किसानों का प्रोत्साहनः–

मुहम्मद बिन क़ासिम ब्राह्मणाबाद से चलकर मनहल पहुँचा, तो वहां के समानी वासियों के सरदारों और व्यापारियों ने आज्ञापालन स्वीकार कर लिया और उनको शरण दी गयी कि वह मालगुज़ारी नियमित रूप से अदा करते रहें और अपने वतन में शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करें। मुहम्मद बिन क़ासिम ने उनके हर सम्प्रदाय के एक आदमी को सरदार नियुक्त किया और जब इसकी ख़बर हज्जाज को दी गयी तो उसने लिखा कि जो आज्ञापालन स्वीकार करे तो उनके खेत में सिंचाई का पानी जारी कर दो, उनको शरण दो,

उनके उद्योगपतियों और व्यापारियों पर अधिक बोझ न डालो और जो खेती और निर्माण कार्य में लगन से काम करते हों उनकी आर्थिक सहायता करके उनके साथ सम्मान का व्यवहार करो। जो लोग इस्लाम क़बूल कर लें, उनसे ज़मीन की पैदावार का दसवां भाग अर्थात उश्र लो और जो लोग अपने धर्म पर क़ायम हों तो वह पुराने नियम के अनुसार अपने उद्योग और खेती में उतना ही माल अदा करें जितना वह पहले देते आए हैं।

स्थानीय वासियों के नृत्य पर ईनामः—

मुहम्मद बिन क़ासिम की दया और कृपा की ख़्याती इस तरह फैली हुई थी कि जब वह मनहल से शम्सा देश की सीमा में लोहाना पहुँचा तो वहां के निवासी नाचते और ढोल बजाते हुए उसके स्वागत के लिए आये और कहा कि उनके यहां जब कोई नया बादशाह या गवर्नर आता है तो वह उसका इसी तरह स्वागत करते हैं। मुहम्मद बिन क़ासिम ने इस नाच का आनन्द लिया और अपने सेनापति ख़रीम बिन उमर से 20 लाल दीनार इनआम दिलवाए।

राजा दाहिर की रानी का सहयोगः—

मुहम्मद बिन क़ासिम लोहाना से सहता पहुँचा तो वहां के सरदार और किसान नंगे पैर और नंगे सर उसके स्वागत के लिए आगे बढ़े और शरण के इच्छुक हुए उनसे ख़िराज लेकर उनको शरण दी गयी और उन्हीं में से कुछ लोगों ने अरब फ़ौज का मार्गदर्शन अलवर तक किया जो सिन्ध का बहुत बड़ा शहर और राजधानी था। उस समय यहां राजा दाहिर का बेटा गोपी शासन कर रहा था। उसने वहाँ के लोगों को विश्वास दिला रखा था कि राजा दाहिर जीवित है और वह सिन्ध से सेना ला कर अरबों से निर्णायक युद्ध करेगा। वह क़िले में कैद हो कर अरबों से लड़ने में लगा रहा। उस समय तक रानी लावी मुहम्मद बिन क़ासिम के अच्छे चरित्र से प्रभावित हो कर उसकी वफ़ादार पत्नी बन चुकी थीं। उसने काले ऊँट पर सवार हो कर क़िले वालों को पुकार—पुकार कर राजा दाहिर की मृत्यु का विश्वास दिलाया और उनको शरण माँगने की नसीहत दी लेकिन क़िले वाले समझे कि यह चण्डालों और गाय खाने वालों का मात्र धोखा है। कई महीनों तक घेराबन्दी जारी रही, अन्त में गोपी क़िला छोड़ कर कहीं चला गया। क़िले वालों ने शरण माँगने के अतिरिक्त कोई और उपाय नहीं पाया, उनको भी शरण दी गयी। मुहम्मद बिन क़ासिम जब क़िले में प्रवेश हुआ तो एक मन्दिर (नौबहार) से गुज़रा, वह उसके अन्दर चला गया, वहां उसने देखा कि एक संगमरमर के घोड़े पर एक औरत सवार है जिसके दोनों हाथों में याकूत और जवाहिरात के कंगन हैं। उसने औरत के एक हाथ से कंगन उतार लिया और एक पुजारी को सम्बोधित करके बोला कि तुम्हारे उपास्य को ख़बर नहीं कि दो कंगन की बजाए एक रह गया है। यह सुन कर पुजारी ने गर्दन झुका ली। मुहम्मद बिन क़ासिम ने हँस कर मूर्ति के हाथ में कंगन डाल दिया इसके बाद उसने घोषणा की कि असैनिक लोगों को शरण दी जाए और जो व्यक्ति युद्ध करे उसको क़त्ल कर दिया जाए।

समझौते का पालन और सम्मानः—

युद्ध करने वालों में एक व्यक्ति आगे बढ़ कर बोला, कि मैं एक आश्चर्यजनक बात बताना चाहता हूँ जो मैं अमीर के

सामने कहूँगा। वह मुहम्मद बिन क़ासिम के सामने प्रस्तुत किया गया तो उसने कहा कि मैं इस शर्त के साथ बताऊँगा कि मेरे परिवार के साथ मुझको भी शरण दी जाए। मुहम्मद बिन क़ासिम ने कहा, मैंने तुझको शरण दी। उसने फिर कहा कि शरण के साथ दस्तावेज़ दिया जाए और उस पर हस्ताक्षर हों। मुहम्मद बिन क़ासिम ने सोचा कि संभवतः इसके पास बहुमूल्य जवाहिरात या आभूषण हों इसलिए शरण पत्र पर हस्ताक्षर करके उसके हाथ में दे दिया। उसके बाद उस व्यक्ति ने अपनी दाढ़ी और मूछों को फैलाया, अपने पैर की उंगलियाँ सिर से लगायीं, फिर नाचने लगा और यह कहता जाता था कि ऐसी आश्चर्यजनक बात कभी नहीं हुई होगी। मुहम्मद बिन क़ासिम को आश्चर्य हुआ कि यह कौन सी आश्चर्यजनक बात प्रकट करने के योग्य थी। सैनिकों ने कहा कि इसने धोखा दिया, इसको शरण न दी जाए। लेकिन मुहम्मद बिन क़ासिम ने कहा कि प्रण प्रण है और समझौता समझौता है, इससे फिरना बड़े लोगों का काम नहीं। इसको क़त्ल करने के बजाए क़ैद में रखा जाए, और हज्जाज का भी निर्णय मालूम किया जाए। उसको उसके परिवार के 22 व्यक्तियों के साथ क़ैदखाने में भेज दिया गया। हज्जाज को इस मामले की सूचना भेजी गयी तो उसने उलमा का फतवा ले कर यह आदेश भेजा कि उस आदमी को स्वतन्त्र कर दिया जाए ताकि समझौते की अवहेलना न हो।

रजा दाहिर के चचेरे भाई पर पूरा भरोसाः–

मुहम्मद बिन क़ासिम ने आगे बढ़ कर बाबिया का घेराव किया, उसके क़िले का शासक कक्का था जो राजा दाहिर का चचेरा भाई था, वह सामना करने की हिम्मत न कर सका। उसने मुहम्मद बिन क़ासिम को उपहार भेजे जिसके बाद अरब के सेनापति ने उसका बहुत आदर–सम्मान किया। वह बड़ा ज्ञानी और बुद्धिमान भी था। इसलिए मुहम्मद बिन क़ासिम ने उसको अपना मन्त्री बना लिया और वह सभी पूर्ण और आंशिक मामलों का परामर्शदाता हो गया। इसको सिंहासन के आगे बैठाया जाता, फिर सभी अधिकारियों और सिपाहियों को अधिकारी बना दिया गया। आस पास के सभी क्षेत्र उसके सुपुर्द कर दिए गये। ख़ज़ाने की कुंजियाँ भी उसके हवाले कर दी गयीं और मुबारक मुशीर की उपाधि दी गयी। वह भी मुहम्मद बिन क़ासिम का दोस्त बन कर उसकी आगे की लड़ाईयों में सम्मिलित रहा।

ब्राह्मण की भलाईः–

मुहम्मद बिन क़ासिम ने जब मुल्तान पर विजय प्राप्त की तो एक ब्राह्मण ने उस पर यह रहस्य प्रकट किया कि यहाँ एक जगह हौज़ है जिसकी परिधि एक सौ गज़ है। उसके बीच में पचास गज परिधि का एक मन्दिर है। उसमें एक कमरा दस गज लम्बा और आठ गज़ चौड़ा है। उसके अन्दर अकूत दौलत छिपा रखी गयी है। उसको पाट कर के उसके ऊपर एक मन्दिर बना दिया गया है जिसमें सोने की एक मूर्ति स्थपित कर दी गयी है और हौज़ के चारों ओर पेड़ लगा दिए गये हैं। मुहम्मद बिन क़ासिम वहाँ पहुँचा तो वहाँ 230 मन (1 मन में 40 किलोग्राम होता है) सोना और 13200 मन सोने की खाक़ ताँबे के मटकों में मिली।

.....जारी.....

❖❖❖

दीनी बेदारी के बग़ैर कुछ मुम्किन नहीं

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आजमी नदवी

हिन्दी अनुवादः आफ़ताब आलम नदवी

आज के मुसलमानों की उमूमी ज़िन्दगी का एक सरसरी अध्यन इस बात के सुबूत के लिए बिल्कुल काफ़ी है कि हमारी ज़िन्दगी में बहुत ज़ियादा बिगाड़ पैदा हो चुका है और समाज में ऐसी ऐसी ख़राबियाँ दाख़िल हो चुकी हैं, जिनका इलाज इसके अलावा और कुछ नहीं कि हम अपने समाज को नये सिरे से तशकील दें, और ज़िन्दगी को उसी पुरानी राह पर वापस ले चलें जहां से हमारे बुज़ुर्गों और असलाफ़ और उम्मत के रहनुमाओं ने अपना सफ़र शुरु किया था।

हमारी सामूहिक ज़िन्दगी में जो बीमारियाँ दाख़िल हो चुकी हैं, वो घुन की तरह ज़िन्दगी की बुनियाद खोखली कर रही हैं, और उसके सारे बुन्यादी अक़ाएद मिटा कर एक ऐसा मिश्रित समाज जन्म देना चाहती हैं जिसका ज़ाहिर इस्लाम और बातिन शिर्क व बिदअ़त और कुफ़्र व निफ़ाक़ होगा, बल्कि मैं एक क़दम आगे बढ़ कर ये कह दूं तो कोई हरज नहीं कि ये समाज ज़ाहिरी इस्लाम से भी महरूम होगा और वह पूर्णतः ग़ैर इस्लामी सोसाइटी होगी जिस पर इस्लाम का लेबल लगा कर सीधे साधे मुसलमानों और अनपढ़ और कम पढ़े लिखे लोगों को धोखा दिया जायेगा।

समाज को तब्दील करने की ये गुप्त मुहिम आज से बहुत पहले शुरु हो चुकी थी लेकिन अब इसका धारा इस कदर तेज़ है कि आम मुसलमानों की ज़िन्दगी इस्लामी मान्यताओं से कट कर और अक़ायद व ईमानियात से अंजान हो कर रह गई है, इस्लाम सिर्फ़ इस बात में महदूद हो कर रह गया है कि रस्मों रिवाजों की पैरवी की जाये, क़ब्रों पर सज्दा किया जाय, उर्स के मिले जुले मेले लगायें जायें, शिर्क और बिदअ़त के तमाम कामों को इतने धूम और एहतिमाम के साथ अन्जाम दिया जाये कि दूसरे लोग इसी को इस्लामी शिआ़र, ईमान व अक़ीदा का हिस्सा समझने लगें और हर देखने वाले को इस का यक़ीन हो जाये कि इस्लाम में ये सब बातें बेहद ज़रूरी हैं, और इसके बग़ैर कोई शख़्स मुसलमान नहीं हो सकता।

आज के आम मुसलमान की ज़िन्दगी में शिर्क बिदअ़त, रूसूम परस्ती, कब्रों की इबादत, नज़र व नियाज़ और इसी तरह की बहुत सी बीमारियाँ इस्लामी शिआ़र की हैसियत से दाख़िल हो चुकी हैं, जिसके बग़ैर वो अपनी ''इस्लामी ज़िन्दगी'' को नाक़िस और अपने ईमान को ग़ैर मोतबर तसव्वुर करता है, इसके नज़दीक़ यही वह अहम और बुन्यादी बातें हैं जो हर मुसलमान के लिए बहैसियत मुसलमान होने के ज़रूरी हैं, वो यक़ीन रखता है कि आख़िरत में उसकी नजात उसी पर आधारित है, और अगर नज़र व नियाज़, फातिहा व उर्स और

अदाएगी रूसूम वग़ैरा में कोई कमी रह गई तो उसकी पकड़ होगी और वो सच्चा और साहिबे अक़ीदा मुसलामन कहलाने का किसी हाल में मुस्तहिक़ नहीं हो सकता है।

एक ऐसा शख्स जो अपने आप को उसके बग़ैर मुसलमान कहलाने का हकदार नहीं समझता, और उन ग़ैर शरई कामों को जिनका इस्लाम से कोई तअल्लुक़ नहीं है, अन्जाम देने के लिए अपनी आखिरी कोशिश सर्फ कर देता है, अगर इबादात व मुआमलात के पहलू से हम उसकी ज़िन्दगी का मुताला करें तो वो न सिर्फ़ उससे ग़ाफ़िल, बल्कि अंजान और उससे बिल्कुल नावाक़िफ़ होगा, उसको दिन रात की नमाज़ों की सही गिन्ती तक नहीं मालूम होगी, वो फ़र्ज़ व सुन्नत से बेखबर होगा, बल्कि हद तो यह है कि वो इस्लाम के बुन्यादी कलिमे से बिल्कुल ना आशना होगा, इस तरह मुआमलात में वो इतना नाक़िस होगा कि लोग उससे बचा करेंगे वो शराब भी पीता होगा, जुआ भी खेलता होगा, और चोरी को जायज़ समझता होगा, लेकिन वही शख़्स हर जुमेरात को किसी बुजुर्ग की क़ब्र पर सज्दा करना ज़रूरी समझता है, शबे बरात के मौक़े पर आतिशबाज़ी के लिए जिस तरह भी रक़म मिल सके उसको जमा करना फर्ज़े ऐन (अनिवार्य) ख़्याल करता है, क़ब्रों पर चढ़ावा चढ़ाने के लिए और उस पर घी का चराग़ रौशन करने के लिए हर तरीक़े से पैसा हासिल करना उसके नज़दीक़ सवाब का काम है, ये सब सिर्फ इसलिए करता है कि उसके नज़दीक उसके बग़ैर इस्लाम का हक़ अदा नहीं हो सकता, और वो सही मानों में मुसलमान कहलाने का हकदार नहीं हो सकता।

यही वो घुन है जो हमारी सोसाइटी में हर तरफ़ फैला हुआ है, हर शहर, गाँव व क़स्बे में इस बीमारी ने अपना क़ब्ज़ा जमा रखा है और आम मुसलमानों को इस मरज़ से किसी तरह नजात नहीं हासिल है। अगर हम गौर करें तो मालूम होगा कि इस बीमारी की बुन्याद हमारे पढ़े लिखे तबक़े का ऐसा गिरोह है जो अपने ज़ाती फ़ायदों के लिए जाहिलों को धोखा देता है, और उनसे दीन के नाम पर ऐसे–ऐसे काम कराता है जिसका दीन से किसी हाल में कोई तअल्लुक़ नहीं है, दीन को खिलौना और दिल की तसल्ली का एक ज़रिआ बना कर ये लोग सादा लौह (भोले–भाले) अवाम को धोखा देते हैं, इसका नतीजा ये होता है कि फिर यह लोग इसी को इस्लाम, ईमान और अक़ीदा सब कुछ समझने लगते हैं, और अगर कोई इनको इन बचकाना हरकतों पर समझाता है तो उसको दीन के दायरे से ख़ारिज़, वहाबी और काफ़िर तक कह देने से नहीं चूकते।

ये रुसूम परस्ती और शिर्क व बिदअत सिर्फ क़ब्रों और नज़र व नियाज़ उर्स और मेलों पर ही सीमित नहीं, बल्कि बहुत सी जगहों पर उसकी शक्लें बदली हुई हैं, कहीं क़ब्र परस्ती का रिवाज कम है, लेकिन शादी ब्याह के मौक़े पर बहुत ग़लत क़िस्म की रूसूम परस्ती की लानत फ़ैली हुई है कि गोया उससे इन्कार पूरे दीन का इन्कार है, कहीं मुआमलात में

लोग इस तरह बेलगाम हैं कि उनके नज़दीक़ मुनाफ़ा खोरी, चोर बाज़ारी और एकाधिकार पर फ़ख्र होता है, और इसमें ऐसा मुक़ाबला शुरु होता है कि कौन ज़ियादा नफ़ा कमा सकता है, कौन पहले बैंक में खाता खोल सकता है और किसको जल्द बेहतरीन मकान बनवाने का मौका हासिल होता है। इसी तरह कहीं ज़ियादा महर रखने का रिवाज आया है तो कहीं बारात के जुलूस में ज़ियादा से ज़ियादा आतिश बाज़ी, कारों की कतार, हाथी और घोड़े की क़तारें, अंग्रेज़ी बाजे पर नाचने गाने और कहीं फूलों और पैसों की बारिश, मालाओं के ढेर और ज़ियादा से ज़ियादा दिखावा करने की रस्म है, और इसको फ़खरिया अन्दाज़ में बयान करने का तरीक़ा है।

ये सब कुछ हमारे इसी मुआशरे में होता है, जिसको बद क़िस्मती से हम इस्लामी मुआशरा कहते हैं, हालांकि इस्लामी मुआशरा में पहले ये चीज़ें मौजूद नहीं थीं, और ना तारीख़ में कहीं इस तरह की बातों का पता चलता है, इस्लामी मुआशरा ऐसे लोगों से बनता है जो सही मानों में मुसलमान हों, शिर्क व बिदअ़त से जो बिल्कुल अंजान हों, रुसूम परस्ती, कब्र नवाज़ी और उन तमाम लानतों से पाक हों, जिनका शरीअत में कोई वजूद नहीं है।

आज के इस्लाम का तअल्लुक़ पहले के इस्लाम से बिलकुल नहीं है अगर आज का इस्लाम रस्म व रिवाज, शिर्क व बिदअत और ग़ैरुल्लाह की इबादत को जायज़ करार देता है तो कल का इस्लाम इससे बिलकुल पाक था। वहाँ ईमान का तक़ाज़ा ये था कि अल्लाह के बताये हुए सारे अहकाम पर अमल हो। इबादात व मुआमलात में हर मुसलमान इस्लामी उसूल के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी गुज़ारे और इस्लामी तालीमात से जर्रह बराबर हटने को दण्डनीय समझे।

लेकिन जब हमारी उमूमी ज़िन्दगी का हाल ये हो कि अल्लाह के अहकाम को पीठ पीछे डाल कर और इस्लामी तालीमात से मुँह मोड़ कर ग़ैरुल्लाह के इल्हाम किये हुए खुराफात को हम इस्लाम का हिस्सा समझने लगें और बुन्यादी अकायद व ईमानियात से बेगाना हो कर हर तरह की बुराईयों में मुब्तला हो जायें तो बिला शुब्हा हमें अपने ऊपर नाज़िल होने वाली मुसीबतों और आये दिन आने वाले अज़ाब का शिकवा भी नहीं करना चाहिए, हम अल्लाह तआ़ला के हुक्म को अदा नहीं कर सकते तो किस मुँह से हम ये उम्मीद रखें कि वह हमारी हिफ़ाज़त करेगा, और मुसीबतों के वक़्त हमारा साथ देगा।

पिछले दिनों मुल्क के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में मुसलामनों पर जो क़यामत नाज़िल हुई वहां के मुसलमानों की आम ज़िन्दगी का जब सर्वे किया गया तो पता ये चला कि वह लोग अपनी ख़ास व आम ज़िन्दगी में इस्लामी तालीमात से बहुत पीछे हट चुके थे, और समाज की हर बुराई और हर गुनाह में वह आगे आगे थे, कितने मुसलमान उनमें ऐसे थे जो शराब की भट्टियों के ठेकेदार थे, और शराब नोशी आम करने के लिए वो बाक़ायदा मुहिम चलाते थे, कितने लोग सनीमा घरों के मालिक थे और उसकी बुराईयों को बढ़ावा देते थे और इस तरह वहां के मुसलमानों की आम ज़िन्दगी दीन से बेगाना हो चुकी थी, तरह–तरह की बुराईयाँ उनकी

ज़िन्दगी और घरों में दाखिल हो चुकी थीं, किसी बुराई का इस्तिक़बाल करने और उसको सीने से लगाने में उनको कोई शर्म नहीं थी, बाज़ दोस्तों से यहाँ तक मालूम हुआ कि इनमें और दूसरे ग़ैर मुस्लिम लोगों में कोई फ़र्क़ नहीं था, बल्कि ये बुराईयों में उनसे भी दो क़दम आगे थे। बे पर्दगी, ज़िनाकारी, शराब नोशी, सूद खोरी, आज़ादी और ग़फ़लत, यह सब इनके समाज का ख़ास हिस्सा था।

इसके बाद भी हम पर मुसीबतें क्यों न नाज़िल हों क़यामत क्यों न हमारे सरों पर टूटे, और हर तरह की बे इन्साफ़ियों का निशाना क्यों न हम बनें? जब तक हमारी ज़िन्दगी का यह हाल रहेगा, यह सब कुछ होता रहेगा और बराबर मुसीबतें व परेशानियाँ आती रहेंगी। इसलिए हर तरह के कदम उठाने से पहले ज़रूरत इस बात की है कि हममें हर शख़्स अपनी ज़िन्दगी का मुताला करे, और इसको इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ बनाये, इबादात व मुआमलात में हम ख़ुद अपनी इस्लाह करें, और लोगों की इस्लाह की कोशिश करें, इसलिए कि अवाम की इस्लाह खुद नहीं हो सकती उसके लिए कोशिश ज़रूरी है लेकिन उसके साथ शर्त है कि हमारी ज़िन्दगी ऐसा नमूना हो कि जिसको देख कर वो मुतअस्सिर हों, और उससे सबक़ हासिल करें।

मुल्क में कुछ दीनी जमाअतें लोगों की इस्लाह का काम पूरी दिलचस्पी से कर रही हैं, और इसके फायदे भी हमारी नज़रों के सामने हैं, लेकिन इस वक़्त जिस तरह ये मर्ज़ फैल चुका है, और ये बीमारी जितनी आम हो चुकी है, इसके लिए ज़रूरी है कि हममें से हर शख़्स अपने आप को अपनी और दूसरों की इस्लाह का ज़िम्मेदार समझे और समाज में दाखिल हो कर वो लोगों के सामने सही इस्लामी ज़िन्दगी का नक़्शा रखे।

जब तक हमारी दीनी हालत बेहतर न होगी और हम अपने निजी ज़िन्दगी में सच्चे मुसलमान न बनेंगे, उस वक़्त तक कोई इलाज फायदेमन्द नहीं हो सकता, मुसलमानों के आपसी इत्तिहाद का ख़्वाब, सियासी बेदारी की कोशिश, सब कुछ उसी वक़्त मुकम्मल हो सकता है, जब मुसलमान सही मानों में मुसलमान हों, और वो दुनिया के साथ–साथ दीन के शैदाई भी हों, बग़ैर दीनी बेदारी के सियासी बेदारी का ख्वाब मुकम्मल नहीं हो सकता।

मुसलमान उसी वक़्त एक ज़िन्दा गतिशील और सक्रिय क़ौम हो सकती है जब उसमें दीनी रूह पूरी तरह मौजूद हो, उसी वक़्त वह क़ौमों की तकदीरें बदल सकता है, और कैसरो किसरा के एवान में ज़लज़ला पैदा कर सकता है, लेकिन मुसलमान इसके बग़ैर राख का एक ढेर है, और मिट्टी की एक तस्वीर है, जो पैरों से रौंदी जा सकती है, और बेदर्दी के साथ उसको टुकड़े–टुकड़े किया जा सकता है।

अगर हमको अपनी हालत और गफ़लत की नींद से बेदार होने की फिक्र नहीं है तो हमको हर तरह की ज़िल्लत, रुस्वाई और गुलामी के लिए तैयार रहना चाहिए।

किसी ने शायद इसी मौक़े के लिए कहा था–

ख़ुदा ने आज तक उस क़ौम की हालत नहीं बदली
न हो जिसको ख्याल ख़ुद अपनी हालत के बदलने का

सरवरे अम्बिया (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

के रौज़-ए-अक़्दस की ज़ियारत ब सआदत का बयान

(इल्मुल फिक्ह से इख़्तिसार के साथ)

मौलाना अब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी रह0

जाइर को चाहिए कि जब ज़ियारत के लिए चले तो यह नीयत करे कि मैं क़ब्रे अक़्दस व अतहर और मस्जिदे अनवर हज़रते ख़ैरुल बशर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ियारत के लिए सफ़र करता हूँ। जिस वक़्त से मदीना मुनव्वरा की तरफ़ कूच करे अपने ज़ौक़ व शौक़ को तरक़्क़ी दे और रास्ते भर दुरूद शरीफ़ की कसरत रखे सिवा औक़ाते नमाज़ के और कज़ाए हाजत के इस बड़ी इबादत में मशगूल रहे।

मदीना मुनव्वरा के अन्दर पहुँच कर सबसे पहले मस्जिदे शरीफ़ में जाए, इस को हर काम पर मुक़द्दस रखे, अगर यह समझे कि सामान वग़ैरह ठीक से न रखा जाएगा तो खो जाएगा तो अपना सामान हिफ़ाज़त से रख कर इत्मीनान से ज़ियारत के लिए आए, मुस्तहब है कि पहले कुछ सदक़ा करे। मस्जिद में दाखिल होते वक़्त एअ़तिकाफ़ की नीयत से पहले दाहना पैर अन्दर रखे और पढ़े, अऊज़ बिस्मिल्लाहिर्रह मानिर्रहीम अस्सलामु अ़ला रसूलिल्लाह, अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू। फिर मस्जिदे शरीफ़ में मुम्किन हो तो मिम्बर के क़रीब वरना कहीं भी दो रकअ़त नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद पढ़ें, उसके बाद दो रकअ़त नमाज़ शुकराने की अदा करें फिर ज़ियारत की तरफ़ तवज्जुह करें, जिस क़दर मुम्किन हो, ज़ाहिर व बातिन से तअ़ज़ीम व अदब का कोई दक़ीक़ा उठा न रखे अर्थात मान व सम्मान में कण भर भी कमी न आने दें, (शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी जज़्बुल कुलूब में लिखते हैं जो बातें शरीयत में मना हैं जैसे सज्दा करना, मुँह ज़मीन पर रखना, जाली को बोसा देना जैसे कामों से बचें और ख़ूब समझें कि इन में कोई अदब नहीं, अदब तो फ़रमाबरदारी (आज्ञा पालन) और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हुक्मों की पैरवी में है। फिर बड़े अदब के साथ, सरे मुबारक की तरफ़ मुँह करके और क़िबला की तरफ़ पीठ करके चार हाथ के फ़ासले पर खड़ा हो, और इस बात का यक़ीन कर ले कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उसकी हाजिरी से वाक़िफ़ (अवगत) हैं और उसके सलाम का जवाब देते हैं फिर बा अदब आवाज़ में बड़े शौक़ व ज़ौक़ के साथ अ़र्ज़ करें। अस्सलामु अलैक या सय्यिदी या रसूलल्लाहु, अस्सलामु अ़लैक या नबीयल्लाह, अस्सलामु अ़लैक या हबीबल्लाह (लम्बा सलाम है फिर अल्लाह से दुआ़ की दरख़्वास्त है, हिन्दी में इतना ही लिखा) जब अपने अ़र्ज़ व मअ़रूज़ से फ़ारिग़ हो तो अपने दोस्तों अज़ीज़ों में से जिस ने सलाम पेश करने को कहा हो उन की तरफ़ से कहे कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फुलां फुलां ने

आपको सलाम अ़र्ज़ किया है, नाम याद न आये तो कहे जिन जिन लोगों ने मुझ से सलाम पहुंचाने को कहा है सबकी तरफ़ से सलाम अ़र्ज़ करता हूँ, आप उन सबके लिए अल्लाह तआला से शफ़ाअ़त करें। इस लेख के पढ़ने वालों में से जिन ख़ुश नसीबों को हाज़िरी की दौलत नसीब हो उनसे इल्तिजा (प्रार्थना) है कि वह इस नाचीज़ का सलाम भी आक़ाए नामदार को पहुंचा दें, और कहें या रसूलुल्लाह आपके गुलाम अब्दुश्शकूर बिन नाज़िर अली ने आप की जनाब में सलाम अर्ज़ किया है, और आपके लुत्फ़ व करम और रहमत व शफ़ाअ़त का उम्मीदवार है। या रसूलुल्लाह अल्लाह तआला ने आप को रहमतुल्लिल आलमीन और रऊफर्रहीम फरमाया है, या रसूलुल्लाह आप की रहमत व राफ़त तो ख़ुदा की तमाम मख़लूक़ को घेरे हुए है, या रसूलुल्लाह ख़ुदा की मख़लूक़ में मैं भी हूं, मैं आप पर ईमान लाया हूँ, अगर्चि नेक बन्दों में नहीं हूँ लेकिन आपकी उम्मत के गुनहगारों में तो हूँ अल्लाह की रहमत हो आप पर और सलामती। जो शख़्स मेरी इस वसीयत को पूरा करे अल्लाह तअ़ाला उसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तुफ़ैल में दुन्या व आख़िरत की कामयाबी नसीब फ़रमाएं और ईमान पर उसकी ज़िनदगी ख़त्म हो आमीन। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जनाब में सलामे नियाज़ अपना और अपने अहबाब का अर्ज़ कर चुकें तो हज़रत अमीरुल मोमिनीन इमामुल मुत्तक़ीन सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु के सरे मुबारक के सामने बड़े अदब से खड़े हो कर सलाम अ़र्ज़ करेः

अस्सलामु अलैक या ख़लीफ़तु रसूलिल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (अरबी में ज़ियादा है हिन्दी में इतना ही लिखा जा रहा है)।

फिर हज़रत अमीरुल मोमिनीन इमामुल मत्तक़ीम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के सरे मुबारक की सीध में ख़ूब अदब के साथ खड़ा हो कर कहे अस्सलामु अलैक या अमीरुल मोमिनीन, अस्सलामु अलैक या मज़हरुल इस्लाम (लम्बा सलाम है हिन्दी में इतना ही लिखा जाता है)।

फिर जिस तरह पहली बार हज़रत सय्यिदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सरे मुबारक के सामने हाथ बांध कर खड़ा था फिर खड़ा हो और जो जो हाजतें रखता हो हज़रत के तुफैल में अल्लाह तआला से मांगे फिर बड़े अदब से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम अर्ज करके वहां से हटे। और अबूलुबाबा के खम्बे के पास आ कर तौबा करे फिर जिस कदर नवाफ़िल की तौफ़ीक़ मिले नवाफ़िल पढ़े। याद रहे कि रौज़े के जुनूबी जानिब यानी क़िब्ला की तरफ़ रौज़े की दीवार में चार गोल सूराख़ हैं, उनमें एक गोल सूराख हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सरे मुबारक की सीध में है उसके बग़ल वाला हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के सरे मुबारक की सीध में है और उसके बग़ल वाला हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0 के सरे मुबारक की सीध में है। यह गोल सूराख़ मवाजेह शरीफ़ कहलाते हैं।

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रौज़े की ज़ियारत के बाद और ज़ियारत की जगहों की जियारत करे जिन को मुअ़ल्लिमीन हज़रात बता देते हैं जन्नतुल बक़ीअ़ जाए और वहां के मुक़द्दस कब्रों की ज़ियारत करे, शुहदाए उहद की ज़ियारत करे और फ़ातिहा पढ़े, हफ़्ते के दिन या जिस दिन मुम्किन हो मस्जिदे कुबा की ज़ियारत के लिए भी जाए वहां पहुंच कर दो रकअ़त नमाज़ तहिय्यतुल मस्जिद पढ़े। जितने दिनों मदीने में क़ियाम हो उसको ग़नीमत जाने, जिस क़दर हो सके इबादत करे।

अपना अक़्सर वक़्त मस्जिद शरीफ़ में गुज़ारे, उसमें एअ़तिकाफ़ करे, नमाज़ रोज़ा, सद्का जितनी इबादतें हो सकें उस मस्जिद में करे। इस मस्जिद शरीफ़ में जब तक रहे अपने दिल और ज़बान और तमाम अंगों को बेकार की बातों और हरकतों से बचाए और हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ ध्यान रखे कि मैं उनके दरबार में हाजिर हूँ, किसी बात की ज़रूरत हो तो ज़रूरत भर बात करके ध्यान उसी जानिब ले जाए।

मस्जिद शरीफ के अदब का खूब ख्याल रखे थूक वगैरह वहां न गिरने पाए, सर या दाढ़ी का बाल वहां न गिरने पाए, गिरा देखे तो उठा ले छुहारे खा कर गुठली बगैरह मस्जिद में न डाले।

जब तक मस्जिदे अक़्दस में रहे हुज्र–ए–शरीफ़ा की तरफ़ बड़े शौक़ से देखता रहे। कम से कम इस मस्जिद में एक कुर्आन मजीद ख़त्म करे। हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हालात में कोई किताब पढ़े या सुने।

मदीना मुनव्वरह के रहने वालों से बड़े अदब और महब्बत के साथ पेश आए, उनमें कोई ख़िलाफ़ शरीअ़त बात देखे तो भी उनकी बुराई न करे, उनसे सख़्ती का बरताव न करे। नर्मी और मीठी बोली के साथ उनकी ग़लती को बताए और उसकी बुराई समझाए। जब मदीना मुनव्वरा में क़ियाम की मुद्दत ख़त्म हो जाए और उस पाक मक़ाम से चलने लगे तो मस्जिद शरीफ़ को इस तरह रुख़्सत करे कि वहां नमाज़ पढ़े दुआ मांगे और रंज व दुख के साथ वहां से चले, फिर हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और शैख़ैन की ज़ियारत करे सलाम अ़र्ज़ करे और अल्लाह तआ़ला से दुआ माँगे कि फिर हाज़िरी नसीब हो दुआ और ज़ियारत की मक्बूलियत की अलामत यह है कि बे इख़्तियार आँसू बह रहे हों, अगर खुदा न करे उसकी यह हालत न हो तो वह कोशिश करके अपने ऊपर यह हालत लाए फिर हज़रत से रुख़सत हो, रुख़सत होते वक़्त पिछले पैरों न लौटे कि सहाब–ए–किराम ने ऐसा नहीं किया।

याद रहे कि मक्का मुकर्रमा के हरम में एक रकअ़त नमाज़ का सवाब एक लाख रकअ़त के बराबर मिलता है और मदीना मुनव्वरा में हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में एक रकअ़त नमाज़ का सवाब पचास हज़ार रकअ़तों के बराबर मिलता है।

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिव्वं व अ़ला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम।

अल्लाहुम्मर्ज़ुक़्ना शफ़ा –अ़तहू

आमीन।

❖❖❖

पैग़म्बर मुहम्मद सल्ल० की गुस्ताख़ी ना काबिले माफी जुर्म

जमाल अहमद नदवी
(उप सम्पादक)

हमारा देश हिन्दुस्तान एक जम्हूरी मुल्क है, और यहाँ की खूबसूरती यहाँ का वह संविधान है जो अपने समस्त नागरिकों को पूरी मज़हबी आज़ादी के साथ रहने सहने और शिक्षा हासिल करने का अधिकार देता है यही इस देश की खूबसूरती का राज है लेकिन कुछ वर्षों से सत्ता पर काबिज़ गोलवलकर के नज़रिये से प्रेरित लोग देश भक्ति का चोला पहन कर यहाँ की अक्लियतों खास कर मुसलमानों को टार्गेट करके इस्लाम और मुसलमानों को बदनाम करने, उनको देशद्रोही साबित करने, उनके पूर्वजों की देश की खातिर कुर्बानियों को मिटाने, उनको संविधान से हासिल अधिकारों को छीनने, शिक्षा के क्षेत्र में रुकावट पैदा करने और देश में अपनी सियासत को चमकाये रखने के लिए हर स्तर पर जाने को तैयार हैं चाहे इसके लिए उनको नये क़ानून बनाने पड़ें, चाहे पुराने क़ानूनों में तब्दीली करनी पड़े, चाहे साम दाम दण्ड भेद का तरीक़ा अख्तियार करना पड़े वह किसी चीज़ से पीछे नहीं, और इस नफरती माहौल को बनाये रखने के लिए उन्होंने अपने भक्तों की एक टीम उतार रखी है और उनको पूरा सियासी संरक्षण और खुली छूट हासिल है कि वह माबलिंचिंग करें, धर्म संसद के नाम पर आग उगलें या राम नवमी के नाम पर तांड़व करें, या हिजाब के नाम पर एक बच्ची पर सैकड़ों लोग नारे बाजी करें, या कालेजों के हास्टलों में घुस कर उत्पात मचाएं, सब जायज़ और सब संवैधानिक, सजा के नाम पर सिर्फ जांच कमेटियों का गठन, और इन्आम के तौर पर ओहदे और सिक्योरिटी, जिसका परिणाम यह निकलता है कि वह और हिम्मत और साहस के साथ इस्लाम की वास्तविक्ताओं से वाकिफ़ होने के बावजूद जान बूझ कर इस्लाम और मुसलमानों पर अभद्र टिप्पणियां करता है और खुले आम उनको मारने काटने की धमकी देता है और मौक़ा मिलने पर गरीब और कमज़ोर मुसलमानों से जय श्री राम के नारे लगवाता है। ताज़ा मामला जिला गोण्डा के थाना खरगूपुर के डिगुर गांव से जुड़ा है, शोसल मीडिया पर वायरल वीडियो में देखा जा सकता है कि किस तरह तीन मुसलमानों को एक युवक कान पकड़ कर उठने बैठने पर मज़बूर करता है और ज़बरदस्ती जय श्रीराम के नारे लगवाता है। अच्छी बात यह है कि पुलिस प्रशासन ने फौरन नोटिस लिया और उसकी गिरिफ़्तारी अमल में आयी।

यहाँ तक तो मुसलमान बर्दाश्त करता चला आ रहा है। लेकिन मुल्क को अशांति की ओर ले जाने वालों के हौसले रोज़ बरोज़ बढ़ते चले जा रहे हैं।

हद तो तब हो गयी जब हिंसा और नफ़रत के पुजारी बीजेपी के दो प्रवक्ताओं नुपुर शर्मा और नवीन जिंदल ने सारी सीमायें लांघते हुए और इस वास्तविक्ता से अवगत होने के बावजूद कि इस्लाम एक आसमानी दीन है उसके आखरी पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्ल0 हैं मुस्लिम समाज का कए एक व्यक्ति उन पर अपनी जान, माल इज्ज़त आबरू सब कुछ न्योछावर करने के लिए सदैव तैयार रहता है, आप सल्ल0 पर अभद्र टिप्पणी कर दी, और भारत सरकार और

बी.जे.पी. कान में तेल डाले सोती रही जब इसके खिलाफ रोष व विरोध देश से निकल कर खाड़ी देशों में पहुँचा और हर ओर से कड़ी निन्दा, विरोध, धरने, प्रदर्शन, बायकाट शुरु हो गये और भारत को अपनी अर्थव्यवस्था चरमराती दिखी तो बी.जे.पी. जागी और उसने अपने दोनों प्रवक्ताओं को सिर्फ निलंबित भर किया और एक लेटर जारी कर के सभी धर्मों के सम्मान का ऐलान किया, लेकिन भारत सरकार अभी भी अपने अडियल रवैये पर बरकरार है पूरे विश्व में देश की साख और छवि खराब होने के बावजूद इनके खिलाफ अभी तक कोई दण्डात्मक कार्यवाई नहीं कर रही है जिसकी वजह से विरोध अभी थमा नहीं है, देश के विभिन्न राज्यों, झारखण्ड के राँची, पश्चिम बंगाल, हैदराबाद, महाराष्ट्र, दिल्ली, कर्नाटक, उड़ीसा के साथ उत्तर प्रदेश के विभिन्न जिलों पहले कानपुर उसके एक हफ़्ता बाद प्रयागराज, सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, लखनऊ में विरोध प्रदर्शन हुए, हम हिंसा का सपोर्ट नहीं करते, लेकिन सरकारों ने विरोध को दबाने और कुचलने का जो बुलड़ोजर ट्रेण्ड अपनाया है यह अमानवीय और असंवैधानिक है, क्या सरकारें हर विरोध प्रदर्शन को दबाने के लिए यही ट्रेण्ड अपनाती हैं।

भारत सरकार के सेना भरती में अग्निपथ योजना के ऐलान के साथ ही पूरे देश के कोने कोने और बात करें उत्तर प्रदेश की तो 20 जिलों में 16 जून, 2022 से अग्निपथ योजना का हिंसक विरोध हो रहा है। ट्रेनें, रेलवे स्टेशन, बसें, छोटे वाहन जलाये जा रहे हैं और सरकारी सम्पत्तियों को भारी नुकसान पहुँचाया जा रहा है। क्या सरकारें हिंसा को कुचलने का वही मापदण्ड और वही बुल्डोजर ट्रेण्ड अपनायेंगी जो इससे पहले अपना चुकीं हैं? क्या गोदी मीडिया चिल्ला चिल्ला कर कहेगा कि बलवाई बख्शे नहीं जायेंगे?

हम आह भी करते हैं तो हो जाते हैं बदनाम
वह क़त्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होता

यह कहाँ का इंसाफ़ है कि ग़ल्ती किसी का बेटा, बाप, भाई, पति, पत्नी करे और सजा उसके सपरिवार को बे घर कर के दिया जाय, हम महिला सशक्तिकरण के अपने किये कार्यों का खूब ढ़िंढ़ोरा पीटते हैं लेकिन कभी ठंढ़े मन से सोचा कि क्या इन घरों की बहन, बेटियाँ, बूढ़ी माएं, पत्नियां, बहुएं महिलायें हैं या नहीं? क्या वह हमारे समाज का हिस्सा नहीं? क्या सब का साथ, सबका विकास सबका विश्वास जीतने का यही तरीक़ा है? हमें सोचना चाहिए कि हिंसा क्यों हो रही है? विरोध क्यों नहीं रुक रहा है? क्या ऐसी अभद्र भाषा का प्रयोग करने वाले मुज्रिमों को सिक्योरिटी दे कर सम्मानित करना चाहिए, या जेल की सलाखों में डाल कर सख़्त सजा देनी चाहिए। इस समस्या का सही समाधान क्या है सरकारें इस से भलीभांति वाकिफ़ हैं।

एक वजीर आला के खिलाफ कोई टिप्पणी कर दे तो ऐजेंसियाँ उसे कब्र से ढूँढ़ लाती हैं, लेकिन एक पैग़म्बर पर कोई अभद्र टिप्पणी करके खुले आम दंदनाता फिरे, तो इसे सरकारों की नाकामी कहा जाए या कुछ और? अभी भी समय है सरकार ऐसे मुज्रिमों को गिरफ़्तार कर ऐसी सख़्त सज़ा दे कि कभी भी कोई भी किसी समुदाय के नबियों, ऋषियों मुनियों के साथ ऐसी अभद्र भाषा का प्रयोग करने की हिम्मत न जुटा सके, और देश प्रदेश हर जगह अम्न शांति बरकरार हो और हमारे देश के मान–सम्मान और अर्थव्यवस्था में और मजबूती आये। ◆◇◆

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः हज न अदा करने वालों की हदीस में यहूद व नसारा से क्यों तुलना की गयी है?

उत्तरः हज़रत शाह वली उल्लाह देहलवी रह0 ने हज न अदा करने वाले को यहूद व नसारा के साथ तुलना करने की वजह यह बयान फरमाई है कि यहूदी व नसरानी नमाज़ पढ़ते थे लेकिन हज नहीं करते थे।

(हुज्जतुल लाहिल बालिगः 386)

आज हमारे समाज में इस पहलू से देखा जाय तो कितने ऐसे लोग मिलेंगे जो सामर्थ्य के बावजूद टाल मटोल करते हैं।

प्रश्नः एक आदमी ने गरीबी की हालत में क़र्ज ले कर हज अदा किया, अब वह मालदार हो गया है, क्या उस पर दोबारा हज करना फर्ज है या गुर्बत की हालत में किया हुआ हज काफी हो गया?

उत्तरः अगर गरीब आदमी किसी तरह मक्का मुकर्रमा पहुँच गया और हज कर लिया उसके बाद वह आदमी मालदार हो गया तो उसके ज़िम्मे से हज अदा हो गया है, अब दोबारा हज के लिए जाना ज़रूरी नहीं, बल्कि गरीबी की हालत में किया हुआ हज ही काफी है।

(रद्दुल मुहतार 2/332)

प्रश्नः एक शख़्स पर हज फर्ज था, लेकिन वह हज के लिए जा नहीं सका, दुर्भाग्यवश उसका माल नष्ट हो गया, अब वह क्या करे?

उत्तरः ऐसे आदमी के लिए गुंजाइश है कि वह क़र्ज़ ले कर हज अदा कर ले फिर क़र्ज़ अदा करने की कोशिश करे।

(रद्दुल मुहतार 2/192)

प्रश्नः एक शख्स के पास इतना माल है कि वह हज अदा कर सकता है, लेकिन उसके पास ज़ाती मकान नहीं है, बल्कि किराये का मकान ले कर रह रहा है, रक़म इतनी नहीं है कि वह हज भी करे और मकान भी बनाये, बल्कि या तो हज कर सकता है या मकान बना सकता है, ऐसी सूरत में क्या करे?

उत्तरः इस सूरत में पहले हज करे, मकान बाद में भी बन सकता है, हदीस शरीफ में है कि हज गुनाह को भी दूर करता है और तंगदस्ती और मोहताजी को भी, इसलिए पहले हज कर ले। (अद्दुर्रुल मुखतार 2/198)

प्रश्नः एक आदमी लन्दन में रहता है और वह अपनी कुर्बानी लखनऊ में 10 जिलहिज्जा को कराता है, दस जिलहिज्जा को लन्दन में 9 जिलहिज्जा होती है तो क्या वह उस तारीख में लखनऊ में कुर्बानी करा सकता है?

उत्तरः जो इबादतें समय के साथ जुड़ी हों वह समय शुरु होने से पहले अंजाम नहीं दी जा सकतीं, और अगर उन्हें समय से पहले कर लिया जाय तब भी वह फर्ज अदा नहीं होगा, कुर्बानी दस जिलहिज्जा की फज्र नमाज़ का वक़्त शुरु होने के बाद वाजिब होती है न कि उससे पहले और हर आदमी के हक में उस जगह की तारीख़

शेष पृष्ठ..37...पर

कुर्बानी

इदारा

सूरः हज आयत नं0 34 में अल्लाह तआला ने फ़रमाया ''हर उम्मत के लिए हमने कुर्बानी के तरीक़े निर्धारित किये हैं ताकि वह उन जानवरों पर अल्लाह का नाम लें जो अल्लाह ने उन्हें दे रखे हैं। आयत का मतलब यह है कि हम पहले भी हर मज़हब वालों के लिए ज़बह का या इबादत का तरीक़ा मुकर्रर करते आए हैं वह उसके ज़रिये से अल्लाह का कुर्ब (निकटता) हासिल करते रहे और उसमें हिकमत यह है कि वह हमारा नाम लें यानी ''बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर'' कह कर ज़बह करें और हमें याद रखें। ईदुल अज़हा की कुर्बानी हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम और हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की यादगार है, हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम को अपने इकलौते बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम की कुर्बानी का हुक्म हुआ था, उन्होंने अपनी समझ से उनकी कुर्बानी कर भी दी थी, हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम ने भी अल्लाह के हुक्म के आगे अपना मस्तक झुका दिया था, अल्लाह तआला को उनकी यह अदा इतनी पसन्द आई कि उम्मते मुहम्मदिया सल्ल0 पर क़यामत तक के लिए उसकी यादगार कुर्बानी का हुक्म हुआ, कुर्बानी एक अहम इबादत और इस्लाम के शआएर चिन्ह में से है, जाहिलियत काल में भी इसको इबादत समझा जाता था मगर लोग बुतों के नाम पर कुर्बानी करते थे, इसी प्रकार आज तक दूसरे धर्मों में कुर्बानी धार्मिक रीति रिवाज के तौर पर अदा की जाती है, ''सूर–ए–कौसर'' में अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्ल0 को हुक्म दिया है कि जिस तरह नमाज़ अल्लाह के अलावा किसी के लिए नहीं पढ़ी जा सकती उसी तरह कुर्बानी भी दूसरे के नाम पर नहीं हो सकती (फ़सल्ले लि–रब्बिका वन–हर) बस तू अपने रब के लिए नमाज़ पढ़ और कुर्बानी कर यानी नमाज़ भी केवल एक अल्लाह के लिए और कुर्बानी भी केवल एक अल्लाह के नाम पर, ''फ़सल्ले लि–रब्बिका वन हर'' इस आयत में मशहूर क़ौल यह है कि ''फ़सल्ले'' से मुराद ईद की नमाज़ है और ''नहर'' से मुराद कुर्बानी है। (तफ़्सीर इब्न कसीर)।

कुर्बानी की तारीख़ें 10,11,12 जिलहिज्जा है, इन तारीख़ों में अल्लाह के निकट सबसे प्रिय और अल्लाह को खुश करने वाला अमल कुर्बानी करना है।

अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इरशाद फ़रमाया'–

''ज़िलहिज्जा की दसवीं तारीख़ यानी ईदुल अज़हा के दिन आदम के बेटे का कोई अमल अल्लाह तआला को कुर्बानी से ज़ियादा प्यारा नहीं, और कुर्बानी का जानवर क़यामत के दिन अपने सींगों, ख़ुरों और बालों के साथ ज़िन्दा हो कर आएगा। और कुर्बानी का खून ज़मीन पर गिरने से पहले अल्लाह तआला की रज़ा और क़बूलियत के मुक़ाम पर पहुँच जाता है,

बस ऐ ख़ुदा के बन्दो दिल की ख़ुशी से कुर्बानी किया करो''।

कुर्बानी न करने पर चेतावनीः–

जो शख़्स हैसियत के बावजूद कुर्बानी नहीं करता, उसके बारे में अल्लाह के रसूल सल्ल0 का फ़रमान'–

''कि जिसके पास गुंजाइश हो और इसके बावजूद वह कुर्बानी न करे, वह हमारी ईदगाह के क़रीब भी न आये''। (इब्न माजा, कुर्बानी के सवाब का बाब, हदीस नं0 3123)।

कुर्बानी करने वालों को चाहिए कि वह अपनी नियत को अल्लाह तआला के लिए ख़ालिस रखें, ग़ैरुल्लाह का इसमें कोई अंश न आने पाये, इसलिए कि कुर्बानी में वास्तविक मूल तक़्वा और इख़लासे नियत का ही है, अल्लाह तआला का इरशाद है ''अल्लाह तआला के पास कुर्बानी के उन जानवरों का न गोश्त पहुंचता है और न ही ख़ून, लेकिन वहाँ तुम्हारा तक़्वा पहुँचता है''।

(सूरः हज आयत –37)

अल्लाह तआला के लिए दिलों में तक़्वा, इख़लासे नियत की ताकीद में रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इरशाद फरमाया– ''अल्लाह तआला तुम्हारी सूरतों और तुम्हारे माल को नहीं देखता, बल्कि वह तुम्हारे दिलों और तुम्हारे आमाल को देखता है''। (मुस्लिम शरीफ़ हदीस नं0 2564)।

कुर्बानी का हुक्म और उसके ज़रूरी मसायलः–

हज़रत अबू हनीफ़ा रह0 के नज़दीक हर मालदार पर कुर्बानी वाजिब है (ख़ुलासतुल फ़तावाः4 / 309)।

हर मुस्लिम मालदार पर कुर्बानी की तारीखों 10,11,12 जिलहिज्जा में कुर्बानी करना वाजिब है। अगर कोई मालदार शख़्स जिस पर कुर्बानी वाजिब है, कुर्बानी के दिनों में जानवर की क़ीमत सद्क़ा कर दे तो कुर्बानी का वुजूब उससे खत्म न होगा, उस पर कुर्बानी वाजिब रहेगी। (आलम गीरी 5 / 293)

जो मुसलमान मर्द हो या औरत 52.5 तोला चाँदी यानी 612 ग्राम चाँदी पर मिलकियत रखता है या इतनी नक़दी रखता है जिससे 612 ग्राम चाँदी खरीद सके, उस पर कुर्बानी वाजिब है। यहां जेवर पहनने वाली औरतों से बड़ी ग़लती होती है, वह 612 ग्राम चाँदी बल्कि उससे ज़ियादा की मालिक होते हुए कुर्बानी करने में कोताही करती हैं।

अगर कोई मुसलमान, घर के ज़रूरी सामान और सवारी के अलावा ऐसी चीज़ पर मिल्कियत रखता है जिससे 612 ग्राम चाँदी ख़रीदी जा सके तो उस पर भी कुर्बानी वाजिब है।

किसान अगर उसके यहाँ इतना ग़ल्लाह होता है कि जिससे साल भर की ख़ूराक़ का प्रबन्ध हो जाए उस पर भी कुर्बानी वाजिब है।

मुसाफ़िर पर कुर्बानी वाजिब नहीं, चाहे वह मालदार हो, हाँ, अगर मुसाफ़िर कहीं 15 दिन ठहरने का इरादा करे और इसी बीच कुर्बानी के दिन आ जाएं तो उस पर कुर्बानी वाजिब होगी।

जिस पर कुर्बानी वाजिब है उसकी इजाज़त के बग़ैर उसकी ओर से उसका कोई क़रीबी रिश्तेदार कुर्बानी कर दे तो वाजिब अदा न होगा, इस

पर ध्यान देना ज़रूरी है। कुर्बानी के दिनों में हर साहिब निसाब को चाहिए कि वह पहले अपनी वाजिब कुर्बानी करे, उसके बाद ही किसी और की तरफ़ से नफ़िल कुर्बानी करे।

अगर कोई शख्स मालदार है और उसके कई बेटे और बेटियाँ और बहुएं हैं तो उनमें जो भी 612 ग्राम चाँदी या उसके बराबर रूपये की मिल्कियत रखता है उस पर भी कुर्बानी वाजिब होगी, सिर्फ घर के मालिक की कुर्बानी से उन लोगों के ज़िम्मे से कुर्बानी खत्म न होगी।

बेहतर है कि कुर्बानी का गोश्त 1/3 गरीबों में बाँटे, 1/3 रिश्तेदारों, दोस्तों को पेश करें और 1/3 अपने घर वालों के लिए रखे, लेकिन अगर कोई शख़्स सब का सब अपने घर वालों को खिला दे तो कोई हरज नहीं।

खाल अगर फ़रोख़्त न हो तो घर के काम में ला सकते हैं, जैसे दस्तरख़ान बना लें, मुसल्ला बना लें वग़ैरह, फ़रोख़्त होने पर क़ीमत सदक़ा होगी।

❖❖❖

अकीक़े का बयान

- किसी के यहां कोई बच्चा या बच्ची पैदा हो तो चाहिए कि सातवें दिन उस का नाम रखे और उसका अकीक़ा कर दे, अकीका करने से बच्चे की बला टल जाती है और बच्चा महफ़ूज़ हो जाता है।
- अगर लड़का हो तो उसकी जानिब से दो बकरे या दो बकरियां अकीक़े में ज़ब्ह करे और लड़की हो तो उसकी जानिब से एक बकरा या बकरी अकीक़े में ज़ब्ह करें और बच्चा हो या बच्ची उसके सर के बाल उतरवा दें और वुसअत हो तो बाल के बराबर चाँदी खैरात कर दें।
- अगर सातवें दिन अकीक़ा न कर सके तो जब भी करे तो सातवां दिन होने का लिहाज़ करना बेहतर है मगर ज़रूरी नहीं। जिस रोज बच्चा पैदा हुआ है उससे पहले वाले दिन अकीका करे जैसे बच्चा जुमे को पैदा हुआ तो जब भी अकीक़ा करे जुमेरात को अकीका करे वह सातवां दिन होगा।
- सर के बाल चाहे ज़ब्ह से पहले उतरवाएं या ज़ब्ह के बाद दोनों बातें दुरुस्त हैं।
- अकीक़े के गोश्त का वही हुक्म है जो कुर्बानी के गोश्त का है, चाहे कच्चा तक्सीम करे चाहे पका कर खिलाएं।
- जिस जानवर की कुर्बानी दुरुस्त है उसका अकीका भी दुरुस्त है।
- अगर लड़के की तरफ़ से एक ही बकरी अकीक़े में ज़ब्ह किया तब भी कोई हरज़ नहीं। कुर्बानी के जानवर में लड़के की जानिब से चाहे एक हिस्सा लें या दो हिस्से लें दुरुस्त है लड़की की जानिब से अकीके के लिए कुर्बानी के जानवर में एक हिस्सा लें।
- अगर गरीब हो और अकीक़ा न कर सके तो कोई हरज नहीं।

◆◇◆

माँ का सम्मान

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

इमाम अबू ह़नीफ़ा रह0 की माँ ने आदेश दिया कि अमुक मुफ़्ती साहब के यहाँ चलो, उनसे कुछ मसला पूछना है। इमाम साहब ने माँ को खच्चर पर बैठाया और लगाम पकड़ कर मुफ़्ती साहब के घर की ओर चलने लगे। रास्ते में जो भी इमाम साहब को देखता झुक कर आदाब–सलाम बजा लाता। कोई अदब से खड़ा हो जाता तो कोई रास्ता देता।

इस्लामी जगत में इमाम अबू हनीफा का बड़ा नाम और सम्मान है, उनको इस दुनिया से विदा लिये हज़ार वर्ष से अधिक समय बीत गया, मगर आज भी इस्लामी विधि विद्यान और शिक्षाशास्त्रों में उनके सिद्धान्त और वक्तव्य पर तर्क–वितर्क किये जाते हैं।

ख़ैर! वह राह चलते चलते कूफा शहर की एक गली में पहुँचे उस गली में एक मुफ़्ती साहब रहते थे। उनके दरवाज़े पर दस्तक हुई तो वह बाहर निकले और इमाम साहब का स्वागत किया व पूछा, हज़रत! कैसे आना हुआ? कहा एक मसला है, उसी को पूछने आया हूँ। मुफ़्ती साहब आश्चर्य से कहने लगे कि हज़रत! आपके रहते मेरी क्या बिसात? इमाम साहब ने कहा, दरअसल मैंने एक फतवा दिया था मगर अम्मीजान का कहना था कि वह आपसे पूछ लेंगी तभी मानेंगी। इस पर मुफ़्ती साहब ने कहा, हज़रत आपने जो फतवा दिया है वह एकदम सही है। माँ ने मुफ़्ती साहब की ज़ुबानी ये सुना तो पलटीं और बेटे से कहा, चलो, अब घर चलें मुझे तसल्ली हो गई।

माँ थोड़ी शक्की तबीयत की थीं, बेटे की बात को ज़ियादा अहमियत नहीं देती थी। हमारे यहाँ एक कहावत है ''घर की मुर्गी दाल बराबर'' शायद ये मुहावरा यहाँ ज़ियादा फिट बैठ रहा है कि जिस बेटे के ज्ञान का लोहा पूरा अरब मान रहा था वही माँ को बेटे के ज्ञान का ज्ञान न था।

किताबों में लिखा है कि कई बार ऐसा भी होता कि माँ का आदेश होता कि फलां मसला है, जाओ अम्र बिन नज़र से पूछ आओ, बेटा भी इतना संस्कारी था कि सब काम धाम छोड़ कर अम्र बिन नज़र के घर पहुँचता और उनके सामने मसला रखता। अम्र बिन नज़र जो कि इमाम अबू हनीफा की ज्ञान सागर की गहराई और उनकी महानता व विशालता से खूब परिचित थे, शर्मिन्दा होते और कहते कि हज़रत मैं आपके सामने कहाँ फतवा दे सकता हूँ, कहाँ आपका ज्ञान और कहाँ हम जैसे का इल्म, इमाम साहब कहते, नहीं! अम्मी जान का हुक्म है कि आपकी राय मालूम करके आऊँ।

कभी कभी ऐसा भी होता कि अम्र बिन नज़र को मसले का हल मालूम न होता तो कहते हज़रत! आप ही इस मसले का जवाब बता दें तो मैं दोहरा दूँ। इमाम साहब जवाब बताते और अम्र बिन नज़र उसको दोहराते। इमाम साहब उसी दोहराए हुए जवाब को माँ की सेवा में ये कह कर पहुँचाते कि ये अम्र का जवाब है। माँ जवाब से संतुष्ट हो जाती तो बेटे को भी खुशी होती।

माँ के इस अमल से बेटे के मन में रत्ती भर भी ध्यान न आता कि मेरे दर्स (कक्षा) में हज़ारों लोग शरीक होते हैं, सैकड़ों लोग मसला पूछने और

फतवा लेने आते हैं मगर माँ है कि मुझे कुछ समझती ही नहीं, मेरे इल्म की क़द्र करती ही नहीं!

इमाम साहब को बस ये धुन सवार रहती की माँ खुश रहे चाहे सांसारिक रूप से उनके मान–प्रतिष्ठा में कोई कमी ही क्यों न आ जाए, क्योंकि उन्हें कायनात के रब का फरमान याद आया कि :–

''हमने इंसान को अपने माता–पिता के साथ अच्छे से अच्छा व्यवहार करने का आदेश दिया है''।

(पवित्र कुर्आन सूरह अनकबूत)

इसी प्रकार पवित्र हदीस में है कि एक व्यक्ति ने अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 से पूछा कि मेरे अच्छे व्यवहार का सबसे अधिक पात्र कौन है? आपने कहा, तुम्हारी माँ। पूछा फिर? कहा तुम्हारी माँ। पूछा फिर? कहा तम्हारे बाप।

इस्लाम में माँ को बहुत उच्च स्थान प्राप्त है। उसकी उच्चता और महानता का इससे बड़ा प्रमाण क्या होगा कि इस्लाम ने माँ के कदमों के नीचे जन्नत रख दी, पवित्र हदीस में हज़रत मुहम्मद सल्ल0 का आदेश इस प्रकार हैः–

''अपनी माँ की सेवा अनिवार्य रूप से करो, क्योंकि माँ के कदमों के नीचे जन्नत है।

(सुनन नसाई)

इस्लाम विरोधी ताकतें हमेशा दुष्प्रचार करती रही हैं कि इस्लाम महिलाओं को बराबरी और सम्मान नहीं देता, जबकि उपरोक्त हदीस ने यह कह कर उनके आरोपों की हवा निकाल दी कि ''माँ के क़दमों के नीचे जन्नत है''।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी बातें.... सहाबा सबसे बेहतर और अच्छे लोगः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया लोगों में सबसे बेहतर लोग मेरी सदी के लोग हैं, फिर वो जो उनके बाद आयेंगे, फिर उनके बाद आने वाले, फिर ऐसे लोग पैदा होंगे कि उनकी गवाही उनके कसम से आगे होगी, और कसम गवाही से आगे होगी। (बुखारी)

अर्थातः बेझिझक झूठी कसमें खाएंगे और झूठी गवाहियाँ देंगे, न अल्लाह का डर होगा और न समाज से संकोच और शर्म।

सहाबा का थोड़ा सा सद्क़ा हमारे बड़े सद्क़ों पर भारी हैः–

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया मेरे सहाबा को बुरा न कहो, अगर तुममें से कोई आदमी उहद पहाड़ के बराबर भी सोना खर्च करे (उस खर्च करने वाला) का सवाब उनके एक मुद (सेर भर) या आधा मुद के सवाब के बराबर भी नहीं हो सकता। (बुखारी)

बद्र की लड़ाई में शामिल सहाबा और फरिश्तों का दर्जाः–

हज़रत रिफाआ बिन राफिअ रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि हज़रत जिब्रईल अलै0 अल्लाह के रसूल सल्ल0 के पास आए और कहा कि बद्र वालों को आप किस स्थान पर समझते हैं? आप सल्ल0 ने फरमायाः हम उनको मुसलमानों में सबसे बेहतर समझते हैं, या इसी तरह की कोई बात फरमाई, हज़रत जिब्रईल अलै0 ने फरमायाः यही हुक्म उन फरिश्तों का भी है जो बद्र में शामिल थे। (बुखारी)

❖❖❖

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

–मौलाना बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

–अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

एक बड़ा भ्रमः–

यहाँ हो सकता है किसी के दिल में ये शुब्हा पैदा हो बल्कि ऐसा अक्सर कहा भी जाता है कि औरत की बुद्धि का मर्द से कम होना (मुशाहेदा अवलोकन) के विरुद्ध और घटनाओं के विपरीत है क्योंकि अनुभव ये बताता है कि दुनिया में बहुत सी औरतें बहुत से मर्दों के मुकाबले में ज़ियादा समझदार और आगे सिद्ध हुईं और आज भी इसकी मिसालें मिलती हैं खासतौर पर हिंदुस्तान की पूर्व महिला प्रधानमंत्री को मिसाल के तौर पर पेश किया जा सकता है।

लेकिन ऐसा सोचने या कहने वाले आमतौर पर ''तुलना'' की बुनियादी और अनिवार्य शर्त नजरअंदाज़ कर देते हैं।

ये बात कॉमन सेंस से संबंध रखने वाली और रोजमर्रा के दिनचर्या के मुताबिक है कि दो चीजों के दरम्यान मुकाबला करते वक़्त और उनके दरम्यान तरजीह का फैसला करने के लिए जाँच करने में दोनों की बहुत से पहलुओं के एतेबार से समानता पहली शर्त के तौर पर देखी जाती है वरना तरजीह का फैसला गलत बल्कि कुछ परिस्थितियों में ''मूर्खता'' समझी जाती है।

मिसाल के तौर पर कहा जा सकता है कि एक मेट्रिक पास और एक एम० ए० पास के दरम्यान कोई मुकाबला करने बैठ जाए तो बुनियादी तौर पर ये मुकाबला न सिर्फ ग़लत बल्कि मूर्खतापूर्ण होगा और इस बेजोड़ मुकाबले के नतीजे में एम० ए० पास का श्रेष्ठ होना साबित हो जाना उसकी श्रेष्ठता का सबूत तो क्या होता उल्टा उसके लिए एक तरह से इस मुकाबले में भाग लेना ही कलंक व शर्म का कारण होगा।

हाँ यही मुकाबला दो मैट्रिक पास करने वालों के बीच या इसी तरह दो एम० ए० पास करने वालों के बीच हो फिर उनमें से कोई एक अपने सह उपाधि धारक सहभागी से बेहतर साबित हो जाए तो ये तरजीह उचित और काबिले तारीफ होगी।

तुलना का साधरण नियम :–

मगर ऐसा आम और स्पष्ट नियम भी..... बुरा हो उस पक्षपात और दुश्मनी का, कि उसकी वजह से औरत व मर्द के बीच मुकाबला करते हुए कुछ उत्कृष्ट औरतों का नाम लेकर मर्दों पर औरत की उत्कृष्टता या कम से कम बराबरी साबित करने वाले छोड़ देते हैं बल्कि उसे मानो भूल जाते हैं लेकिन इस बुनियादी शर्त का लेहाज़ करके मुकाबला किया जाए तो आज जैसे ''रौशन'' और ''विकसित'' जमाने में भी हर कमाल के क्षेत्र, राजनीति हो या नेतृत्व, कारीगरी हो या पेशा, प्रयोगात्मक ज्ञान हों या सैद्धांतिक, देहातों की ख़ाक छानना हो या अंतरिक्ष यात्रा सब में न सिर्फ मर्दों का अनुपात ही ज़ियादा मिलेगा बल्कि विश्व स्तर पर पहली लाईन में सिर्फ़ मर्द ही नज़र आएंगे यहाँ तक कि खास उन क्षेत्रों में भी जिनमें औरतें सदियों से लगी हुई हैं मर्द ही पहली लाईन में नज़र

आता है जैसे पूरब में खाना पकाना सीना पिरोना वगैरह का काम। इस सिलसिले में सब से रोचक और सार्थक स्वीकारोक्ति हिंदुस्तान की पूर्व महिला प्रधानमंत्री की है जिसमें उन्हों ने खुद कहाः— ''ज़ियादा बेहतरीन बावर्ची और दर्जी मर्द ही होते हैं''। और आगे कहाः— कश्मीर में ज़ियादातर हाथ के बेहतरीन काम (कशीदाकारी) मर्द ही करते हैं।

(कौमी आवाज, लखनऊ दिनांक 8 मार्च 1976)।

हाँ! ये हो सकता है कि महिलाओं में से पहली लाईन का मुकाबला तीसरी लाईन के मर्द से किया जाए तो मुम्किन है औरत ''उत्कृष्ठ) नज़र आएं लेकिन अगर मुकाबला पहली लाईन के मर्द से हो तो कौन समझदार शख़्स औरत को आगे कह सकता है। मिसाल के तौर पर सबसे ज़ियादा मुकम्मल औरतों में मज़हबी हैसियत से हज़रत आईशा रज़ि0, बेशक उम्मत के बहुत से अल्लाह के वलियों बल्कि बाज़ सहाबा से भी अफजल हैं लेकिन क्या हज़रत अबू बक्र व उमर रज़ि० से भी उन्हें हर हैसियत से कोई बेहतर समझ सकता है।

उपरोक्त विवरण से मालूम हुआ कि कुछ गिनी चुनी विशिष्ट औरतों का नाम ले कर ये साबित करने की कोशिश करना कि औरत मर्द से किसी तरह कमतर नहीं है भ्रामक और मूर्खता के सिवा कुछ नहीं।

औरत व मर्द की बराबरी का एक हास्यास्पद पक्षः—

बहुविवाह के खिलाफ ''प्रमाणों'' की सूची से इस हास्यास्पद प्रमाण का जिक्र करना तो शायद गैर ज़रूरी होने के अलावा सद्बुद्धि पर बोझ भी हो कि मर्द को चन्द बीवियां रखने का हक देना और औरतों से चन्द पतियों के साथ आनंदित होने का हक छीन लेना बराबरी के ख़िलाफ़ है।

इस पर सिर्फ ये कह देना ही शायद हर अक़लमंद के लिए बशर्ते कि वो सच्चाई की तलाश करने वाला हो काफी होगा कि ऐसी औरत जो चन्द पतियों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध बनाना बराबरी की पहचान और विकासशीलता की सीढ़ी समझती हो। औरत तो नहीं है और चाहे जो कुछ हो क्या ऐसी औरत किसी एक पति की भी ''हमसफ़र'' और ''सच्ची बीवी'' बन सकेगी और क्या ऐसे ''साझा काम'' के आए हुए नतीजे (बच्चों) की जिम्मेदारी (कुंडली खर्चा वगैरह) उनमें से कोई कबूल करने के लिए तैयार होगा। ऐसी सूरत में उस औरत के बच्चे उसके ''गले का हार'' बनने और ''जुर्म'' की नक़द सजा नज़र आने के सिवा और कुछ नहीं मालूम होंगे और मान लिया जाए सब तैयार हो भी जाएं तो किसको तरजीह दी जाएगी और उन में से किसके एक्शन को ''रिएक्शन'' समझा जाएगा। सच तो ये है कि इस्लाम ने नसब (कुण्डली) की हिफाज़त और सही नसब बताने पर जिस हद तक ज़ोर दिया है उस का अंदाज़ा और उसके फायदों को वे लोग समझ ही नहीं सकते जो ''गोद लेने और इंसानी क़ानून के जरिए'' खानदानी बच्चे को अपना बच्चा बना लेने में बुराई नहीं समझते और इस अप्राकृतिक सम्बन्ध को प्राकृतिक रिश्ते का बदल और उसके समान समझते हैं।

.....जारी.....

❖❖❖

गुमनाम शहीद पीर अली खाँ

इदारा

वर्ष 1820 में आजमगढ़ के मुहम्मदपुर गाँव में जन्मे पीर अली किशोरावस्था में ही घर से भाग कर पटना चले गये थे। वहां एक नवाब मीर अब्दुल्लाह ने उनकी परवरिश की। मीर साहब की मदद से पीर अली ने पटना में किताबों की एक दुकान खोल ली। कुछ लोग पीर अली खाँ को जिल्दसाज भी बताते हैं। कामकाज के सिलसिले में वह कुछ क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आए और उनकी वह दुकान धीरे–धीरे क्रांतिकारियों के अड्डे में तब्दील हो गई। उनकी दुकान पर क्रांतिकारी साहित्य मंगाए जाते, फिर वहां से बेचे जाते थे। देश की आज़ादी पीर अली के जीवन का उद्देश्य बन गई थी। उसी दौरान दिल्ली के क्रांतिकारी अजीमुल्ला खान से उनका सम्पर्क बना और आसपास के इलाक़ों में घूम–घूमकर उन्होंने क्रांतिकारी मिजाज के युवाओं को संगठित और प्रशिक्षित करना शुरु किया।

1857 की क्रांति का बिहार में भी भारी असर हुआ। गया, छपरा, पटना, मुजफ़्फ़रपुर और मोतिहारी जैसी जगहों में क्रांतिकारियों ने अनेक अंग्रेज़ों को मौत के घाट उतार दिया था। क्रांतिकारियों का मुकाबला करने के लिए अंग्रेज़ों ने दानापुर में एक छावनी स्थापित की। लेकिन दानापुर के सैनिक मेरठ की घटनाओं के कारण अंग्रेज़ों से असंतुष्ट थे और वे क्रांतिकारियों का साथ दे रहे थे। पटना के नागरिकों ने भी अंग्रेज़ों के खिलाफ संगठन खड़े किए थे। अंग्रेज़ अधिकारी इन सब पर पैनी नज़र रखे हुए थे। तीन जुलाई, 1857 को अनेक सशस्त्र युवा पीर अली के घर पर इकट्ठा हुए। फिर पीर अली के नेतृत्व में कई टुकड़ियों में बंट कर आज़ादी के उन दीवानों ने गुलज़ारबाग़ स्थित अंग्रेजों के उस प्रशासनिक भवन को घेर लिया, जहां से क्रांतिकारी गतिविधियों पर नज़र रखी जाती थी। वहां तैनात अंग्रेज़ अधिकारी डॉ0 लॉयड ने क्रांतिकारियों की भीड़ पर गोलियां चलवा दीं। जवाब में क्रांतिकारियों की ओर से भी गोलियां चलने लगीं। दोतरफा गोलीबारी में कुछ क्रांतिकारी मारे गए, तो लॉयड और कुछ सैनिक भी शहीद हुए। जबकि पीर अली अपने कुछ साथियों के साथ बच निकलने में सफल हुए।

अंग्रेज़ का दमन चक्र चला और अनेक निर्दोष लोगों की गिरफ़्तारियां हुईं कुछ के घर तोड़े गए, तो कुछ को झूठा मुठभेड़ बता कर गोलियों से भून दिया गया। आखिरकार पाँच जुलाई 1857 को पीर अली और उनके चौदह साथियों को बगावत के जुर्म में गिरफ्तार कर लिया गया। यातनाओं के बीच पटना के कमिश्नर मिस्टर टेलर ने पीर अली को लालच दिया कि अगर वह अपने क्रांतिकारी साथियों के नाम बता दें, तो उनकी जान बच सकती है। पीर अली ने उनका प्रस्ताव ठुकराते हुए कहा, ''ज़िन्दगी में कई मौके ऐसे आते

हैं, जब जान बचाना ज़रूरी होता है। कई ऐसे मौके भी आते हैं, जब जान देना ज़रूरी हो जाता है। यह वक्त जान देने का है''। ब्रिटिश हुकूमत ने दिखावटी जांच के बाद सात जुलाई 1857 को पीर अली को उनके साथियों के साथ बीच सड़क पर फांसी पर लटका दिया। पीर अली का बलिदान व्यर्थ नहीं गया। 25 जुलाई को दानापुर के देसी सैनिकों ने जगदीशपरु के बाबू कुंवर सिंह के नेतृत्व में खुद को आज़ाद घोषित कर दिया।

पीर अली के नाम पर पटना में एक मोहल्लाह पीरबहोर आबाद है। लेकिन इस क्रांतिकारी के बारे में लोगों को ज़ियादा मालूम नहीं। कुछ साल पूर्व बिहार सरकार ने उनके नाम पर गाँधी मैदान के पास एक छोटा सा पार्क बनवाया, शहर को हवाई अड्डे से जोड़ने वाली एक प्रमुख सड़क को 'पीर अली खां रोड' नाम दिया, और सात जुलाई को उनके शहादत दिवस पर समारोहों का आयोजन शुरु किया।

(दैनिक अमर उजाला, 15 दिसम्बर, 2021)

❖❖❖

आपके प्रश्नों .....

का एतिबार होगा जहां वह रह रहा है इसलिए जब लन्दन में उस दिन 9 जिलहिज्जा है तो अभी उस पर कुर्बानी वाजिब नहीं हुई, इसलिए उस दिन अगर ऐसी जगह कुर्बानी की जाय जहाँ 10 जिलहिज्जा शुरु हो गयी तब उसकी कुर्बानी अदा नहीं होगी, हाँ अगर वह लखनऊ में कुर्बानी कराना चाहते हैं तो उनकी कुर्बानी 11 जिलहिज्जा को होनी चाहिए जब लन्दन में 10 जिलहिज्जा की तारीख हो।

(किताबुल फतावा 9/38)

प्रश्न: आज कल सींग व हड्डी भी बेची जाती है, मशहूर है कि कुर्बानी के जानवर की यह चीजें दफन कर देनी चाहिए, इस सिलसिले में शरीयत का क्या हुक्म है?

उत्तर: जिस जानवर की कुर्बानी की जाय उसके समस्त हलाल व पाक हिस्से इस्तेमाल किये जा सकते हैं, इसलिए बेहतर है कि इन हिस्सों को बेच कर उनकी क़ीमत सद्क़ा कर दी जाए, यह बात जेहन में रहनी चाहिए कि कुर्बानी के जानवर की जो भी चीज़ बेची जाय उसकी क़ीमत का सद्क़ा वाजिब है उन चीज़ों का दफन कर देना नाहक माल को बर्बाद करना और गरीबों को एक नफे से महरूम रखना है, हाँ जहाँ इसके खरीदने बेचने का इन्तेज़ाम न हो वहाँ मजबूरी है।

(किताबुल फतावा 9/38)

प्रश्न: अगर कुर्बानी का जानवर गाभिन हो तो क्या उसकी कुर्बानी कर सकते हैं और अगर ज़बह करने के बाद उसके पेट से बच्चा निकले तो उसको क्या करना चाहिए?

उत्तर: अगर कुर्बानी से पहले मामूल हो जाय कि जानवर गाभिन है तो ऐसे जानवर की कुर्बानी न करना चाहिए, फुक़हा ने उसे मकरूह करार दिया है, जानवर को ज़बह करने के बाद अगर पेट से मुर्दा बच्चा निकले तब तो वह मुर्दार के हुक्म में है उसको खाना जायज़ नहीं, अगर ज़िन्दा निकले तो उसको ज़बह करके खाने की गुंजाइश है, लेकिन मुस्तहब और पसंदीदा यह है कि उसको ज़िन्दा हालत में सद्क़ा कर दिया जाए और किसी गरीब आदमी को दे दिया जाए ताकि वह उसकी परवरिश कर ले।

(किताबुल फतावा 9/43)

❖❖❖

अंधकार की पीड़ा

इं0 जावेद इक़बाल

संसार के प्रत्येक भाग में आतंक और लूटमार का खुला खेल खेला जा रहा है। कोई भी देश भांति भांति के अत्याचारों से स्वयं को सुरक्षित नहीं कह सकता। इन्सान का खून और उसकी इज्ज़त जो उसके रचयिता की दृष्टि में अत्यन्त मूल्यवान थी स्वयं इन्सान ने उसे मूल्यहीन कर दिया। पूरी दुन्या में मानव रक्त नाली के गन्दे पानी की भांति बहाया जा रहा है। एक समुदाय दूसरे का अपमान करने के लिए उसकी माओं और बहनों को सर्वप्रथम निशाना बनाता है। और दूसरों को क्यों कहा जाये स्वयं अपने परिवार की स्त्रियों को तुच्छ सांसारिक प्रलोभनों के लिए मौत की नींद सुलाया जा रहा है। महिलाओं के उच्च स्तर एवं उनकी स्वतंत्रता के सुन्दर पर्दे के पीछे उनके शोषण के कैसे–कैसे षडयंत्र रचे जा रहे हैं। बँधुवा मजदूर एवं गुलामी की प्रथा पुनः किस किस बहाने से प्रचलित की जा रही है। विस्तार की आवश्यकता नहीं हम सब भली प्रकार अवगत हैं। इस जैसे अनेक घिनौने षडयंत्र समाज सुधार एवं मानव अधिकार के नाम पर संसार के प्रत्येक क्षेत्र में चतुर राजनीतिज्ञ रचने में व्यस्त हैं।

आश्चर्य तो इस बात पर है कि यह सब अत्याचार धर्म के नाम पर किये जा रहे हैं। एक धर्म समप्रदाय के विरुध दूसरे को उत्तेजित किया जा रहा है। एक के मन में दूसरे के प्रति द्वोष एवं घृणा की भावना को भड़काया जा रहा है। और कभी आपस में ही श्रेष्टता एवं हीनता का एहसास जगा कर सर्वनाश की ज्वाला के पीछे कुछ समाज के विशेष दिग्गज अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं।

क्या रचयिता ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ट प्राणी इसीलिए बनाया था कि मानव, मानव का ही गला काटे, ख़ून बहाये, एक दूसरे की इज़्ज़त लूटे और अपमान करे। ईश्वर ने सृष्टि की रचना करके समस्त प्रजा को स्थिर नियमों के अधीन कर्म करने के लिए बाध्य कर दिया था ताकि सृष्टि की प्रत्येक रचना मानव की सेवा निरन्तर करती रहे। असंख्य वर्ष बीत गये सूर्य ने अपना कार्य नहीं छोड़ा, अपना मार्ग नहीं छोड़ा, अपनी चाल नहीं छोड़ी, नित्य पूर्व से उदय हो कर पश्चिम में अस्त होता है और अपने सृष्टा का आज्ञाकारी कहलाता है। चन्द्रमा अपने मार्ग से विचलित नहीं हुआ। धरती ने अपने अन्न और जल के भण्डारों में कमी नहीं की। वायु ने श्वांस प्रक्रिया में सहायता नहीं छोड़ी, फूलों ने महकना नहीं छोड़ा और वृक्षों ने फलना नहीं छोड़ा। निष्कर्ष यह हुआ कि सृष्टि की प्रत्येक वस्तु हज़ारों वर्ष से अपना वही कार्य कर रही है जिस पर उसके रचयिता ने आरम्भ में उसे नियुक्त किया था।

परन्तु इन्सान को कर्मों और विचारों की स्वतंत्रता दे कर सर्वश्रेष्ट प्राणी के सुन्दर मुकुट से सुशोभित किया था एवं धरती पर ईश्वर ने उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया था। धरती को सजाने एवं संवारने के साथ साथ अपनी उपासना का सर्वोत्तम कार्य सौंपा था। उसने इन्सान को अपने ही वर्ग को

सताने, जलाने एवं रक्त बहाने की स्वतंत्रता नहीं दी थी। कर्म की स्वतंत्रता अवश्य दी थी परन्तु जीवन निर्वाह हेतु नियमावली भी विशेष संदेष्टाओं के माध्यम से समय समय पर आवश्यकतानुसार प्रेषित की थी, उसी का नाम धर्म था। ईश्वर सदा से एक था, एक है, और एक रहेगा। तो फिर कैसे कहा जाये और कैसे माना जाये कि उसके द्वारा प्रेषित नियमावलियाँ संसार के भिन्न भागों में भिन्न होंगी। समय और क्षेत्र के अनुसार भाषाएं अवश्य ही अलग थीं परन्तु नियमावली सदा ही समान रही। अर्थात धर्म अलग अलग नहीं हो सकते। क्या दयालुवान एवं कृपालु ईश्वर जिसने मानव हित एवं उसकी सेवा पर समस्त सृष्टियों को लगा दिया, इन्सान को भिन्न भिन्न धर्म दे कर आपस में लड़वाएगा? कदापि नहीं।

वर्तमान युग का घोर अंधकार एवं महान भ्रम यही है कि एक सत्य मार्ग को अनेक मिथ्या मार्गों में तकसीम कर दिया गया है। इसी भ्रम ने मनुष्य को मनुष्य का दुशमन बना दिया है। और समाज में मुट्ठी भर स्वार्थियों को धर्म के नाम पर रक्तपात का अवसर प्रदान कर दिया है।

आश्चर्य एवं अफ़सोस तो यह है कि कोई आवाज़ नहीं आती जो निःस्वार्थ भाव से मानव कल्याण की पीड़ा से व्याकुल हो। क्या धरती पर कोई हृदय नहीं जो मानव हित के दर्द से तड़प रहा हो? क्या अब कोई नहीं जो मानव प्रेम का पाठ संसार को पुनः याद दिलाए। भांति भांति की बोलियाँ बोली अवश्य जा रही हैं, परन्तु प्रभावकारी नहीं, क्योंकि दर्द से रिक्त हैं, पीड़ा से मुकत हैं, तो फिर हितकर कैसे हों?

विज्ञान ने इन्सान को आकाश में उड़ा दिया। और मण्डल ही नहीं परिमण्डल के ग्रहों को समीप से दिखा दिया। परन्तु ऊपर आकाश से यह इन्सान स्वयं अपनी धरती को देख कर भी न देख सका। यह भी कोई देखना है ऐसे तो हज़ारों वर्ष से चील कौवे भी देखते आ रहे हैं। देखना तो यह है कि मानव हित एवं जन कलयाण के वास्तविक केन्द्र बिन्दु की खोज की जाय। क्या धरती और आकाश के जटिल नियम, पदार्थों एवं तत्वों के अपरिवर्तनीय सूत्र, समस्त प्राणियों की रचना एवं उत्पत्ति और उनके शरीर की पेचीदा प्रणाली, जिसका विस्तृत ज्ञान खोलने के बाद भी बहुत थोड़ा ही जान पाने का एहसास यह नहीं दर्शाता कि सृष्टि का रचयिता सर्वशक्तिमान है, अपार ज्ञानी है, एवं एक अकेला है। यदि अनेक रचयिता होते तो किसी न किसी समय विभिन्न इच्छाओं की उत्पत्ति के कारण सृष्टि का संचालन अव्यस्थित कर देते और यदि वह शक्ति विहीन होता तो इच्छा विहीन भी होता, न सर्वश्रेष्ट होता न सर्वशक्तिमान होता। निष्कर्ष यह कि सृष्टिा एक है उसकी इच्छा भी एक है। समस्त संसार के इन्सानों का पिता एक है माता एक है, धरती एक है सूर्य एक है, चन्द्रमा एक है, श्वांस एक है, शरीर प्रणाली एक है अतः धर्म भी एक है।

यदि सिद्धान्त रूप से यह मान लिया जाय तो सारे विरोध समाप्त हो सकते हैं। वास्तव में यही केन्द्र बिन्दु है, जिस पर आने के बाद एकता के आधार की खोज की जा सकती है। समस्त मानव जाति भाई–भाई के अटूट प्रेम की माला में पिरोई जा सकती है।

❖❖❖

मायूसी की नहीं ईमान के जज़्बे की ज़रूरत

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद रह0

अब हिन्दुस्तान की सियासत का रुख़ बदल चुका है, अब यह हमारे अपने दिमाग़ों पर मुन्हसिर है कि हम किसी अच्छे अन्दाज़े फ़िक्र में सोचते हैं या नहीं?

अज़ीज़ों! हरास का यह मौसम आरज़ी है, मैं तुमको यह यक़ीन दिलाता हूँ कि हमको हमारे सिवा कोई हरा नहीं सकता है। मैंने तुम्हें हमेशा कहा और आज फिर कहता हूँ कि तज़बजुब का रास्ता छोड़ दो, शक से हाथ उठा लो और बदअमली को तर्क कर दो। यह देखो कि मस्जिद के मीनार तुमसे झुक कर सवाल करते हैं कि तुमने अपनी तारीख़ के सफ़हात को कहां गुम कर दिया है, अभी कल की बात है कि यहीं जमुना के किनारे तुम्हारे क़ाफ़िले ने वुज़ू किया था और आज तुम हो कि तुम्हें यहां रहते हुए खौफ़ महसूस होता है।

अज़ीज़ो अपने अन्दर एक तब्दीली पैदा करो जिस तरह आज से कुछ अर्सा पहले तुम्हारे जोश–ख़रोश बेजा थे, उसी तरह आज तुम्हारा ख़ौफ़ व हरास भी बेजा है, मुसलमान और बुज़दिली और मुसलमान और इश्तिआल एक जगह जमा हनीं हो सकते, सच्चे मुसलमान को न तो कोई लालच हिला सकती है और न कोई ख़ौफ़ डरा सकता है।

अज़ीज़ो तब्दीलियों के साथ चलो, यह न हो कि हम इस बदलाव के लिए तैयार न थे, बल्कि अब तैयार हो जाओ, सितारे टूट गए, लेकिन सूरज तो चमक रहा है, उससे किरने मांग लो और उन अंधेरी राहों में बिछा दो, जहां उजाले की सख़्त ज़रूरत है, मैं तुम्हें यह नहीं कहता हूँ कि तुम हाकिमाना इक्तिदार की मदद से वफादारी का सर्टिफिकेट हासिल करो और कासा लेसी की वही ज़िन्दगी अख़्तियार करो जो गैरमुल्की हाकिमों के अहद में तुम्हारा शेआर रहा है। मैं कहता हूँ कि जो उजले नक्श व निगार तुम्हें इस हिन्दुस्तान में माज़ी की यादगार के तौर पर नज़र आते हैं, वह तुम्हारा ही काफिला लाया था, उनहें भुलावो नहीं, उन्हें छोड़ो नहीं, उनके वारिस बन कर रहो और समझ लो कि अगर तुम भागने के लिए तैयार नहीं तो फिर तुम्हें कोई ताक़त भगा नहीं सकती। आओ अहद करें कि यह मुल्क हमारा है, हम इसके लिए हैं और इसकी तकदीर के बुनियादी फैसले हमारी आवाज़ के बगैर अधूरे रहेंगे।

आज जलज़लों से डरते हो? कभी तुम खुद एक जलज़ला थे, आज अंधेरे से काँपते हो? क्या याद नहीं रहा कि तुम्हारा वजूद एक उजाला था, यह बादलों की सैल क्या है कि तुमने भीग जाने के खतरे से अपने पाएंचे चढ़ा लिए हैं, वह तुम्हारे ही बुज़ुर्ग थे जो समन्द्रों में उतर गए, पहाड़ों की छातियों को रौंद डाला, बिजलियां आयीं तो उन पर मुस्करा दिये, बादल गरजे तो कहकहों से जवाब दिया, सर सर उठी तो रुख फेर दिया, आँधियाँ आईं तो उनसे कहा कि तुम्हारा रास्ता यह नहीं है, यह ईमान की जांकनी है कि शाहंशहों के गिरेबानों से खेलने वाले आज खुद अपने ही गिरेबान के तार बेच रहे हैं और ख़ुदा से इस दर्जे ग़ाफ़िल हो गए हैं कि उस पर कभी ईमान ही न था।'' (आज़ाद की तक़रीरें 169–173) ◆◇◆

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

ट्रेन का हवा वाला सफर देता है रोमांचः–

ट्रेन का नाम सुनते ही मन में ट्रैक पर दौड़ती गाड़ी का ख़याल आने लगता है। लेकिन जर्मनी में अनोखी रेलवे आपको हैरान कर देगी। यहां ट्रेनें ज़मीन पर बिछे ट्रैक पर नहीं बल्कि हवा में लटके ट्रैक पर दौड़ती हैं। 13:30 किलो मीटर की दूरी तय करने वाली इस ट्रेन को मोनोरेल भी कहा जाता है। यह एक फिक्स्ड ट्रैक पर सड़कों से ऊपर होती हुई गुज़रती है। नदी, रास्ते, झरने और दूसरी चीज़ों को क्रॉस करती हुई ये ट्रेन लटके–लटके ही सफर पूरी करवाती है। अख़्बार के मुताबिक़ 82 हज़ार लोग रोज़ाना ट्रेन से सफ़र करते हैं।

आस्ट्रेलिया के नये पीएम, जिन्होंने माँ की मौत के बाद पिता को ढूँढाः–

एपी सिडनीः लेबर पाटी के नेता एंथनी अल्बानीस ऑस्ट्रेलिया के नये प्रधानमंत्री चुने गए हैं। अल्बानीस (59) ने कहा कि पेंशन के भरोसे गुजर करने वाली माँ का इकलौता बेटा आज प्रधानमंत्री के रूप में आपके सामने खड़ा है।

अल्बानीस के बचपन की कहानी बेहद अलग है। उनकी माँ ने उन्हें 'नाजायज' ठहराने से बचाने के लिए 14 साल की उम्र में उन्हें सच्चाई बताई कि उनके पिता की मौत नहीं हुई और उनके पैरेन्ट्स की कभी शादी नहीं हुई थी। अपनी माँ की भावनाओं को आहत न करने के डर से अल्बानीस ने 2002 में उनकी मृत्यु के बाद अपने पिता की तलाश की। वह दक्षिण इटली के बारलेटा में 2009 में अपने पिता से मिले। वह उस समय ऑस्ट्रेलिया के परिवहन बुनियादी ढाँचा मंत्री थे। अल्बानीस ने कहा है कि वह क्लाइमेट चेंज पर काम करेंगे।

जापान में अकेलापन बड़ी समस्याः–

जापान की आबादी करीब साढ़े 12 करोड़ है, जिसमें 30 प्रतिशत लोग यानी 3 करोड़ 80 लाख लोग 65 साल से ज़ियादा उम्र के हैं, उम्र बढ़ने के साथ ही यहाँ पर अकेलापन भी एक समस्या बनता जा रहा है, जिसकी वजह से जापान सरकार ने पिछले साल ही *Loneliness Ministry* यानी अकेलेपन का मंत्रालय शुरु किया था ये मंत्रालय अकेले रहने वाले लोगों को सामूहिक गतिविधियों से जोड़ता है, जिससे लोग अकेलापन महसूस न करें और आत्महत्याओं पर भी अंकुश लगाया जा सके क्योंकि, जापान में अकेलेपन के कारण आत्महत्या के मामलों में वृद्धि हो रही है, 2020 में जापान में 21 हज़ार लोगों ने आत्महत्या की थी, ये संख्या इसलिए ज़ियादा है क्योंकि जापान एक बहुत छोटा देश है और यहाँ के लोग आर्थिक रूप से परेशान नहीं हैं, बल्कि वो अकेलेपन से दुखी रहते हैं।

इस अकेलेपन से तंग आ कर अब वहां कई बुज़ुर्ग दुकानों में जा कर चोरी करते हैं ताकि पकड़े जाने पर लोग कम से कम उनसे बात करें, उसके अलावा वहां अकेलेपन से लड़ने के लिए अब लोग *Robots* का सहारा ले रहे हैं, ये *Robots* वहां के लोगों से बात करते हैं और उन्हें ये एहसास दिलाते हैं कि वो अकेले नहीं हैं, हमारे सहयोगी चैनल, *WION* की *Managing Editor Tokyo* के एक ऐसे ही अस्पताल में पहुँची, जहां *Robots* थैरेपी के ज़रिए ऐसे लोगों का इलाज किया जा रहा है, जो अकेलेपन का शिकार हैं, इससे पता चलता है कि अपने देश की आर्थिक तरक्की के लिए जापान के लोगों ने कितनी बड़ी कीमत चुकाई है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳ - ٹیگور مارگ
لکھنؤ - ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 25/12/2021 तारीख

स्टॉफ़ क्वाटर्स की तामीर के लिए अपील

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा हज़रत मौलाना सैय्यद मो0 राबे हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी व दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, दारुल उलूम और उसकी ब्रांचों में इल्मी तालीमी सिलसिला बराबर जारी है, टीचर्स व स्टॉफ अपनी ज़िम्मेदारियों को अंजाम दे रहे हैं, टीचर्स व स्टॉफ की अधिकता की वजह से दारुलउलूम में उनके रहने की गुंजाइश नहीं रही तो दारुलउलूम के मेन कैम्पस के अलावा माहद सिकरौरी में स्टॉफ क्वाटर्स और माहद के करीब नदवा कालोनी की तीन मंज़िला बिल्डिंग तामीर हुई, मगर अब भी स्टॉफ के लिए क्वाटर्स की कमी बहुत ज़ियादा महसूस की जा रही है, इस सूरते हाल की वजह से नदवा मेन कैम्पस से करीब मुहल्ला मकारिम नगर में कुछ और स्टॉफ क्वाटर्स बनाने का फैसला किया गया है, और अल्लाह तआ़ला की मदद के भरोसे पर यह तामीर शुरु कर दी गयी है।

नये स्टॉफ क्वाटर्स की यह बिल्डिंग तीन मंजिला होगी, जिसमें 9 फेमली क्वाटर्स होंगे, इसकी तामीर पर 1,15,00000/– (एक करोड़ पंद्रह लाख) रूपये के खर्च का अंदाज़ा है, जो इंशाअल्लाह अहले खैर हज़रात के सहयोग से पूरा होगा।

हम उम्मीद करते हैं कि आप इस अहम ज़रूरत की ओर फौरन तवज्जोह फरमायेंगे और नदवतुल उलमा के कारकुनों का हाथ बटायेंगे।

हमें अल्लाह तआला की ज़ात पर पूरा भरोसा है कि उसकी मदद से यह काम मुकम्मल होगा।

मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं0 **7275265518** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नदवतुल उलमा
STATE BANK OF INDIA MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
–:तअ़मीरः–
A/C No. 10863759733

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।
Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/ Website: www.madwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/0795
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2021 To 2023
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 21 - Issue 05

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

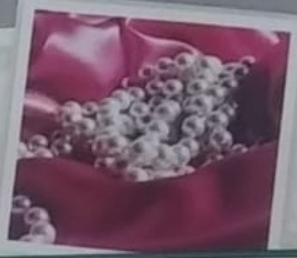

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE

Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.

विशेषज्ञ

पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग

24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE

G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983